राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ।

राधास्वामी गाय कर जनम सुफल कर ले ।
यही नाम निज नाम है मन अपने धर ले ॥

प्रेमपत्र राधास्वामी

पांचवीं जिल्द

राधास्वामी मौज से प्रेमपत्र जारी ।
दृढ़ बिस्वास होय चरन में और प्रीति गाढ़ी ॥
सुमिरन ध्यान और भजन में नित नया आनंद पाय ।
सतसंगी सब उमंग २ राधास्वामी महिमा गाय ॥

जिसको कि

परम संत सतगुरु हुज़ूर महाराज साहब ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

राधास्वामी ट्रस्ट
स्वामी बाग़, आगरा-२८२ ००५

प्रकाशक

राधास्वामी ट्रस्ट

स्वामीबाग़, आगरा-२८२ ००५

पहली बार	सन्	१९०३	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
दूसरी बार	सन्	१९५४	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
तीसरी बार	सन्	१९७५	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
चौथी बार	सन्	१९८४	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन्	१९९३	ईसवी	२०००	प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

पांचवीं बार २००० | सन् १९९३ ई० | मूल्य अजिल्द २२.५० सजिल्द २६.००

मुद्रक

राष्ट्रीय आर्ट प्रिंटर्स

मोतीलाल नेहरू रोड

आगरा-३

प्रेमपत्र जिल्द पांचवीं जो कि सन् १८९७ ई० पहिली मई से सन् १८९८ ई० ३० अप्रेल तक ख़तम हुआ उसके बचनों का

सूचीपत्र

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
१	जिसके दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का, और सच्चा फ़िकर अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है...	१
२	दुनियां में जो कोई दुखिया होता है, वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके, थोड़ी बहुत समझौती या शान्ती या मदद हासिल करता है ...	९
३	जो कोई तीनों गुन यानी सत, रज, तम के चक्कर और घेर में रह कर परमार्थ की कार्रवाई करे, तो वह किसी	

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
	न किसी अस्थान पर माया के घेर में रहेगा	१५
४	आदि में शब्द प्रघट हुआ, शब्द से ही कुल्ल रचना हुई	२०
५	सुरत का जगत में उतार और फंसाव और जुगत उसके उद्धार	२५
६	दुनिया की मान बड़ाई और भोग बिलास देख कर हर कोई उनकी चाह उठाता है	३५
७	जगत उपदेश	४२
८	और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के करम धरम यानी बाहर मुखी कार्र-वाई पर ज़्यादह ज़ोर दिया है ...	६६
९	परमार्थी कार्रवाई इस देह और इस देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सकती	७३
१०	चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूरी है	८१
११	बर्णन भेद और सबब देरी का मन	

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
	और सुरत के चढ़ने और अस्थानों के खुलने में	८८
१२	जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है ...	९३
१३	परमार्थी जीवों को भक्ती अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये	११९
१४	बग़ैर गुरु भक्ती और बिना गुरु चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निज धाम की तरफ़ सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है ...	१२८
१५	और मतों में उद्धार के वास्ते मेहनत और तकलीफ़ ज़्यादा और फ़ायदा बहुत कम	१४४
१६	जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये	१४९
१७	कलजुग करम धरम नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई ...	१५७
१८	लेना देना पकड़ना और छोड़ना ...	१६४
१९	सतगुरु बचन सुनो और मानो गुरु चरन प्रीत पालो और चालो ...	१७३

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
२०	जागो भागो और तोड़ो जोड़ो ...	१७६
२१	पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा	१८६
२२	जाँचो सम्हालो और होशियार हो	१६१
२३	मन भूले को समझाओ शैतानी अंग हटाओ	१६६
२४	उगलो निगलो देओ और लेओ	२०१
२५	बर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में	२०५
२६	रचो भजो हटो तजो मरो जीवो और बसो	२१६
२७	निरखो और छोड़ो परखो और पकड़ो	२२१
२८	समेटो और चढ़ाओ मत बिखरो और मत उतारो	२२५
२६	बचो सजो चलो और मिलो ...	२३१
३०	दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना	२३७
३१	चलो चलो घर घंट पुकारे ॥ रलो मिलो संग दयाल पियारे ॥	२४४

नम्बर बचन	सुरखी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
३२	निरबंधी बंधन बंधा बँध निर बंधी होय	२४६
३३	सच्चे परमार्थी के भक्ती की कार्र-वाई का बर्णन	२५७
३४	सहज उपदेश	२७३
३५	मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है ॥ ...	३८०
३६	सुरत का आंखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना ...	३६३
३७	दाता से दाता ही को मांगे और दात का आशिक़ न होवे ...	४००
३८	बर्णन सबब डिगमिग हो जाने जोव का	४०५
३६	मालिक कहता है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आसक्ती और नहीं ठहर सक्ती, उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ ...	४१५

नम्बर बचन	सुरखी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
४०	सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है ...	४२५
४१	मालिक कुल्ल की तरफ़ से बावजूदे कि वह घट में मौजूद है, और कभी २ बोलता भी है, जीव बेपरवाह और भूले हुए हैं	४३५

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

बचन–१

जिस के दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है उसी को सतगुरु और उनका दर्शन और बचन और प्रेमीजन प्यारे लगेंगे। और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का शौक़ पैदा होगा। फिर उसी शख़्स की परमार्थी हालत रोज़ बरोज़ बदलेगी और वही एक दिन धुरधाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा॥

१—जिस किसी को दुनिया का हाल और देहियों की नाशमानता और दुख सुख का भोग और मौत का

सिर पर खड़ा होना देखकर, सच्चा ख़ौफ़ और फ़िकर अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है, उसी को संत सतगुरु और उनका सतसंग प्यारा लगेगा। क्योंकि वहां उस को भेद सच्चे मलिक और उसके धाम का, जहां से जीव आदि में आया है और जुगत वहां चल कर पहुंचने की मालूम होवेगी, और उन से रास्ता तै करने में मदद मिलेगी ॥

२—संत सतगुरु के सतसंग और बचन से यह फ़ायदे हासिल होंगे—(१) संसै और ग़लती और भरम दूर होवेंगे, (२) फ़ज़ूल तरंगें और दुनियां के सामान में पकड़ हलकी होवेगी, (३) सतसंग करने वाले की समझ और बूझ बढ़ेगी, (४) प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरनों में पैदा होकर बढ़ती जावेगी, (५) भेद रास्ते का और जुगत उसके तै करने और कुल्ल मालिक के धाम में पहुंचने की दरियाफ़्त होवेगी, (६) दुनिया की असलियत और उसकी नाशमानता और धोखे की जगह होने की ख़बर पड़ेगी, (७) अंतर अभ्यास और रास्ता तै करने में मदद मिलेगी, (८) जब बचन सुनकर और अन्तर अभ्यास करके मन और बुद्धि निर्मल होवेंगे, तब सतसंगी जीव की रहनी भी दुरस्त होती जावेगी और परमार्थी रंग

चढ़ता जावेगा, (९) सुरत शब्द मारग का निश्चै आवेगा और अभ्यास दुरस्ती से बन पड़ेगा और अन्तर में कुछ रस भी मिलता जावेगा, (१०) राधास्वामी दयाल के दर्शन की उमंग और शौक़ पैदा होकर बढ़ेंगे, (११) मन के बिकारी अङ्ग घटते जावेंगे, (१२) और निर्मलता और सकारी यानी शुभ अङ्ग पैदा होते जावेंगे ॥

३—खुलासह यह है कि जो कोई सच्चा दर्द और सच्ची तलाश लेकर संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होवेगा, उस की हालत चंद रोज़ में बदलनी शुरू होगी, यानी (१) अङ्ग (२) ढङ्ग (३) सङ्ग (४) रङ्ग बदल जावेंगे, यानी (१) अंग दीन और प्रेमी जैसा सच्चे परमार्थी का चाहिये हो जावेगा और दुजन्मा तिजन्मा चौजन्मा और पचजन्मा यानी पशु से मनुष्य और फिर देवता और ईश्वर कोटी और फिर हंस और परमहंस यानी संतगती को प्राप्त हो जावेगा (२) ढंग और स्वभाव बजाय संसारी के भक्तों का सा हो जावेगा, (३) संग संसारी और कपटी और अहंकारियों का छूट कर प्रेमी और सज्जनों को प्राप्त होगा, (४) और चौथे संसारी मलीन रंग उतरता और निर्मल प्रेम का रंग चढ़ता जावेगा ॥

४—जिस किसी के मन में सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा

शौक़ पैदा हुआ है, वह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग पाकर, और उनके बचन बिलास सुन कर, और रात दिन की रहनी और बर्तावा निरख परख कर, ज़रूर अपनी संसारी समझ बूझ और रहनी और हालत पर अफ़सोस करके उनको बदलना शुरू करेगा, और अंतर अभ्यास की मदद से वह नई हालत और रहनी उस की मज़बूत और क़ायम होती जावेगी ॥

५—जो कोई कि सतसंग में शामिल होते हैं रप चित्त देकर बचन नहीं सुनते, और न उनके मानने का इरादह रखते हैं, उनका स्वभाव और रहनी और समझ बूझ जैसा कि चाहिए नहीं बदलेगी और संसारी आदतें और स्वभाव ज़बर रहे आवेंगे, और बर्तावा उनका सतसंग में विशेष करके संसारियों का सा रहेगा, और भक्ती अंग और कार्रवाइयों में उपरी बर्तेंगे ॥

६—इस क़िसम के आदमी जब सतसंग में कोई ज़बर काम या रीत प्रेम और भक्ती की बर्तते देखते हैं, उनकी उनको बरदाश्त नहीं होती क्योंकि उनके हिरदे में उस दरजे का प्रेम नहीं है। लेकिन सतसंग में कुछ बोल नहीं सक्के, पर बाहर निकल कर दुनिया-दारों के सामने, जिन के साथ उनका ज़बर मेल रहा

आता है, उस चाल ढाल की बुराई और निंदा करते हैं, और प्रेमियों को नादान और बेहोश समझते हैं, बल्कि सतगुरु को भी दोष लगाते हैं, कि वे प्रेमियों को ऐसी कार्रवाई से क्यों नहीं रोकते और उनके साथ बाज़ी २ कार्रवाई में आप भी क्यों शामिल हो जाते हैं ॥

७—इसी सबब से बुद्धिमान और विद्यावान जो कि अहंकारी और असल में निपट संसारी होते हैं, और मालिक के चरनों में प्रेम से ख़ाली, संतों और उनके प्रेमी जनों के सतसंग में शामिल होने के क़ाबिल नहीं समझे जाते हैं। क्योंकि यह अपनी ओछी और संसारी मलीनता की सनी हुई बुद्धि से, सतसंग की कार्रवाई और भक्ति अंग के बर्ताव को देख कर ताने मारते हैं, और प्रेमियों को नादान या अज़ख़ुदरफ़्ता समझते हैं, और सिर्फ़ गुफ़्तगू ज़बानी या पोथी के पाठ को या अभ्यास करने को परमर्थी कार्रवाई समझते हैं, और इस बात से बेख़बर हैं कि जब तक मन और इन्द्रियां निर्मल और निश्चल न होवेंगी तब तक जो कुछ ऊपर की लिखी हुई परमार्थी कार्रवाई उन से बनेगी वह ऊपरी होगी। और जब तक प्रेम मन में न आवेगा, तब तक असर उस कार्रवाई का क़ायम नहीं रहेगा, और न सुरत यानी रूह

तक पहुंचेगा। और यह प्रेम और निर्मलता सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा और भजन और भक्ती अंगों में बर्ताव करने से हासिल होवेंगे और तब भजन और अभ्यास भी दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और मन के बिकारी अंग भी दूर होवेंगे ॥

८—विद्यावान और बुद्धिमान और ज़ात पाँत और बड़े घराने और धन के अभिमानी लोग जो कभी इत्तफ़ाक़ से संतों के सत्संग में शामिल भी हो जावें तो वह चाहे जिस क़दर सतसंग और अभ्यास करें, उनकी हालत सिवाय ज़ाहिर में बातें बनाने के अंतर में बहुत कम या बिलकुल नहीं बदलेगी। क्योंकि कुल्ल कार्रवाई उनकी मान और अहंकार लिये हुए होवेगी, और उनके मन में सच्ची दीनता और सच्चा भाव और प्यार सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में और भी प्रेमी जनों में कभी नहीं आवेगा। इसी वजह से वे लोग हमेशा ख़ाली रहेंगे, बल्कि मान और अहंकार ज़्यादा हो जावेगा। लेकिन इस क़िसम के लोगों का सतसंग में ठहरना मुश्किल है, उन से प्रेमियों की हालत नहीं देखी जा सक्ती है, और न प्रेमियों के भक्ती अंग की कार्रवाई की बरदाश्त हो सक्ती है ॥

९—सच्चे प्रेमी का विद्यावान और बुद्धिवान और

मानी और अहंकारी लोगों से मेल और मुहब्बत बहुत कम यानी सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ क़ायम रहेगी, और उसकी नज़र में दुनिया और उसके सामान, और उसके बड़े आदमियों की इज्ज़त और क़दर दिन २ घटती जावेगी, और उनका संग करने में अपना नुक़सान और अकाज मालूम पड़ेगा ॥

१०—सच्चे और प्रेमी परमार्थी के मन में हमेशा यही चाह बनी रहेगी, कि मन मत छोड़ कर जिस क़दर जल्दी बन सके गुरुमुख अंग में बर्ताव करूं, और कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल और सतगुरु की मौज के साथ मुवाफ़क़त करूँ और रजा में बरतूं, और इस आसा के पूरन करने के वास्ते उसकी कोशिश बराबर जारी रहेगी ।

११—सच्चे प्रेमी के मन और सुरत की चाल अंतर में भी सहज बढ़ती जावेगी, और प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु के चरनों में दिन २ गहरी होती जावेगी, और उनकी मेहर से एक दिन उसका काम बन जावेगा, यानी धुरधाम में पहुंच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

१२—कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जहां तक मुमकिन हो सच्चे प्रेमी यानी गुरुमुख का

संग करें, और उसी के पैतरों पर चलें। यानी संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर, जिस क़दर बन सके सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर कमाई करें, और उनके चरनों में थोड़ा बहुत प्रेम लावें, तो उनके जीव का भी गुज़ारा सहज में हो जावेगा ॥

१३—जो जीव कि संसारी परमार्थ कर रहे हैं, यानी सिवाय राधास्वामी मत के और मतों की चालों में चल रहे हैं, और थोड़ा बहुत अभ्यास भी (जिस को वे अंतर-मुख समझते हैं) करते हैं, उनको ख़बरदार किया जाता है, कि उस कार्रवाई से सच्चा और पूरा उद्धार हासिल नहीं होगा, और न घर की तरफ़ का रास्ता तै होगा, क्योंकि बिना सुरत शब्द मारग के अभ्यास के यह रास्ता तै होना ना मुमकिन है। और प्राणों का खींच कर चढ़ाना और रोकना ख़ास कर इस वक़्त में किसी जीव से दुरुस्ती के साथ बनना ना मुमकिन है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़दर तहक़ीक़ात उनको मंजूर है, राधास्वामी संगत में करके सुरत शब्द का अभ्यास जिस क़दर बने जारी करें और अपना जनम सुफल करें। यानी सच्चे उद्धार के रास्ते पर आजावें, नहीं तो जनम मरन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा ॥

१४—संसारी जीवों से भी दया करके कहा जाता है, कि दुनिया के हाल पर नज़र करके और कुल्ल रचना की हालत डावाँडोल और अनअस्थिर यानी नाशमान समझ कर, थोड़ी बहुत करनी राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़, वास्ते अपने आइंदा के फ़ायदा यानी जीव के कल्यान के लिये ज़रूर शुरू करें, और इसी ज़िंदगी में अपनी हालत बदलती हुई देखें, ताकि आइंदा की बेहतरी का यक़ीन आजावे, और फिर थोड़ा बहुत शौक़ और उमंग के साथ कार्रवाई जारी करके, एक दिन परम धाम और परम आनंद को प्राप्त होजावें ॥

बचन--२

दुनिया में जो कोई दुखिया होता है वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके थोड़ी बहुत समझौती या शान्ती या मदद हासिल करता है। लेकिन जो वह संत सतगुरु के सनमुख जावे, और उनके बचन सुनकर थोड़ी बहुत उनकी

पहिचान करे, तो उसको परम शान्ती प्राप्त हो सक्ती है। और कोई अर्सह सतसंग और अभ्यास से दुख सुख के चक्कर और घेरे से निकल सक्ता है॥

१—दुनिया में हर शख़्स अपने दुख और दर्द का हाल किसी अपने प्यारे के सामने कह कर अपने मन और चित्त को हलका करता है। और जो मुमकिन होता है तो उस प्यारे से कुछ मदद वास्ते कम करने या दूर करने उस दुख के लेता है। लेकिन हमेशा हर हालत और हर सूरत में मदद, या किसी क़िसम की शान्ती नहीं मिलती। और बाज़े ऐसे सख़्त दुख हैं कि वह किसी जुगत से दूर नहीं हो सक्ते॥

२—लेकिन जो कोई सन्त सतगुरु या साधगुरू के सतसंग में जाकर अपना हाल अर्ज़ करे, तो वे अपने अमृत रूपी बचनों से थोड़ी बहुत शान्ती फ़ौरन् बख़्शते हैं। और जो सतसंग जारी रक्खे तो यक़ीन है, कि किसी क़िसम का दुख और कलेश उसके हिरदे में न रहे और हर वक़्त थोड़ा बहुत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लौलीन रहे, और संसार की तरफ़ से उदासीनता उसके मन में छाई रहे॥

३—सन्त सतगुरु की ऐसी महिमा है, कि जो उनके सतसंग में कोई सच्चा दुखिया या स्वार्थी आजावे, और कोई काल हाज़िर रह कर चित्त देकर उनके बचन सुने, तो उनकी मेहर और दया से उसका दुख और कलेश भी दूर हो जावे, और उसका मतलब भी या तो पूरा हो जावे, या उसके मन में वह ख़्वाहिश बिल्कुल दूर हो जावे और परमार्थ की दात मुफ़्त में अलावा इसके बख़्शिश मिले ॥

४—सन्तों का परमार्थ बहुत भारी है, और हर किसी को प्राप्त नहीं हो सक्ता। जिन पर धुर की मेहर है, वही सन्तों के सन्मुख आते हैं, और प्रीत के साथ उनके सत-संग में ठहर सक्ते हैं। हर एक जीव की ताक़त नहीं है कि सतसंग में ठहर सके ॥

५—सन्तों के सतसंग में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा, और उनके निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल बर्णन किया जाता है, और जुगत चलने की सुरत शब्द मारग के वसीले से बराबर प्रघट करके सुनाई जाती है, और दुनिया और दुनियादारों के परमार्थ का हाल भी खोल कर समझाया जाता है, कि जिस्से जीवों की आंख खुलती

जाती है और सच्चे मालिक से मिलने का सच्चा रास्ता मालूम होता है ॥

६—जो जीव कि सच्चा दर्द अपने निज घर में यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का रखते हैं, और संसार और उसके सामान से किसी क़दर सेरी और उदासीनता मन में पैदा हुई है, वेही संतों के बचन को आदर भाव के साथ सुनेंगे, और जहां तक मुमकिन होगा, उनकी दया का बल लेकर, उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करेंगे ॥

७—जिन जीवों के हिरदे में परमार्थ का ख़ास शौक़ नहीं है, लेकिन इत्तफ़ाक़ से संतों के सतसंग में आ जावें, तो कोई दिन की हाज़िरी के बाद उनके दिल में सच्चे परमार्थ का सच्चा शौक़ पैदा हो जावेगा। और फिर वे मुवाफ़िक और प्रेमी जन के भक्ती के अंगों में बर्ताव करेंगे, और उपदेश लेकर अंतर अभ्यास में भी लग जावेंगे। इस तरह उनके जीव का कारज भी सहज में बन जावेगा ॥

८—खुलासा यह है कि संत सतगुरु के दर्शन और सतसंग की बड़ाई और महिमा कोई बर्णन नहीं कर सक्ता है, यानी जो जीव साधारन तौर पर उनके सन्मुख आ जावेंगे, उनके भी उद्धार का सिलसिला जारी

हो जावेगा। और चौरासी का चक्कर बन्द होकर उनको बराबर नरदेही मिलेगी, जब तक कि वे सत्तलोक में न पहुँचें। जब कि आम जीवों पर संत सतगुरु ऐसी दया फ़रमाते हैं, तो फिर सच्चे परमार्थियों की हालत और बख़्शिश का, जिस क़दर कि उनको मिलेगी, क्या बयान हो सक्ता है। यानी वे जीव जल्द माया के घेर से निकाल कर दयाल देश में पहुंचाये जावेंगे। और उनके करम बहुत जल्द काट कर निर्मल कर लिए जावेंगे। यह फ़ायदा नित्त के सतसंग और अंतरमुखी सुरत शब्द मारग के अभ्यास से हासिल होवेगा॥

९—सुरत शब्द मारग से मतलब यह है कि रूह यानी जीवआत्मा को बाहर से उसका रुख़ फेर कर शब्द की धुन में जो हरदम घट २ में हो रही है लगावें। और उसको सुनते हुये ऊपर को चढ़ाना, यानी जिस मुक़ाम से आवाज़ आ रही है, वहां पहुंचाना॥

१०—शब्द की धुन से मतलब चेतन्य की धार से है, जो कि आदि में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली, और नीचे उतरकर कई ठेके यानी मंज़िलों पर ठहरती हुई, और मंडल बांध कर रचना करती हुई, इस लोक में और पिंड में आई है। आदि में शब्द प्रघट हुआ यानी जो चेतन्य धार

कुल्ल मालिक के चरनों से निकली, उसके साथ आवाज़ हुई, और वही धार और आवाज़ कुल्ल रचना की करतार है, इस वास्ते जो कोई आवाज़ को पकड़ कर अन्तर में चलेगा, वही धुर धाम में पहुंचेगा ॥

११—शब्द के बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अन्धेरे में प्रकाश करने वाला नहीं है, और शब्द ही ज़हूरा और निशान कुल्ल मालिक यानी चेतन्य का है। इसी वजह से शब्द सब को प्यारा लगता है, और शब्द ही से कुल्ल रचना की कार्रवाई और जीवों के कारोबार जारी है ॥

१२—कुल्ल मालिक का स्वरूप शब्द है, और जितने पद यानी अस्थान रचे गये हैं, जैसे सत्त नाम और ब्रह्म व पारब्रह्म और आत्मा और परमात्मा वग़ैरह सब शब्द स्वरूप हैं, और कुल्ल जीव भी शब्द स्वरूप हैं। इस सबब से बग़ैर शब्द की उपाशना और ध्यान के, कोई रास्ता तै करके निज घर में नहीं पहुंच सक्ता है ॥

१३—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना पूरा और सच्चा उद्धार चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है, कि बाहर संत सतगुरु का सतसंग और उनके चरनों में सेवा और प्रीत करें और अंतर में शब्द गुरू के चरनों

में, जो सन्त सतगुरु का निज रूप है प्रीत लाकर, अभ्यास शब्द के सुन्ने का करें, तब काम दुरुस्त बनेगा ॥

बचन--३

जो कोई तीनों गुन यानी सत रज तम के चक्कर और घेर में रहकर परमार्थ की कार्र वाई करे, तो वह किसी न किसी अस्थान पर माया के घेर में रहेगा। लेकिन जो प्रेम और भक्ति के साथ संत सतगुरु से उपदेश लेकर करनी करेगा, तो उसको संतों का सिद्धान्तपद यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम एक दिन प्राप्त हो सक्ता है।

१--जिन मतों का सिद्धान्त माया के घेर में है, उन मतों के पैरोकार यानी मानने वाले हमेशा माया के घेर में रहेंगे ॥

२--जो कोई उन में से अभ्यास अंतर मुख वास्ते प्राप्ती अपने मत के सिद्धान्त पद के करेंगे, वे कुछ काल

सुख अस्थान में बासा पावेंगे, लेकिन जनम मरन का चक्कर चाहे बहुत देर के बाद होवे, नहीं छूटेगा। और बाक़ी जीव जो सिर्फ़ टेकी होंगे, और कुछ अभ्यास अन्तर मुख वास्ते समेटने और चढ़ाने मन और सुरत या प्राण वग़ैरह के नहीं करेंगे, वे अपने करम अनुसार नीचे ऊंचे लोक और जोन में बासा पावेंगे, और इनका जनम मरन बनिस्बत अभ्यासी जीवों के जल्द होता रहेगा ॥

३—मालूम होवे कि जहां तक तीन गुन और पांच तत्त की दौड़ है, वहां तक माया का घेर है, चाहे अति सूक्षम होवें और चाहे महा अस्थूल, इस वास्ते ऐसा जतन करना मुनासिब है, कि जिस्से सुरत इस घेर के पार पहुंचे। और वह जतन सुरत शब्द का अभ्यास है ॥

४—इस अभ्यास का उपदेश सिर्फ़ राधास्वामी मत में (जो कि संत मत है) जारी है। जो कोई उस की कमाई करेगा, वह एक दिन माया के घेर से निकल जावेगा ॥

५—राधास्वामी मत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप सन्त सतगुरु रूप धारन करके जारी फ़रमाया है। और उस में मुफ़स्सिल भेद रास्ते और मंज़िलों

का मैं शब्द हर एक मुक़ाम के खोल कर सिलसिले-वार वर्णन किया है। और जुगत अभ्यास की दया करके ऐसी आसान कर दी है, कि जिसको लड़का जवान बूढ़ा और स्त्री और पुर्ष बे तकलीफ़ सहज में कमा सक्ते हैं। और वास्ते दुरुस्ती से करने इस अभ्यास के कोई ज़रूरत घर बार और रोज़गार छोड़ने की नहीं है, यानी ग्रहस्त में बैठ कर यह अभ्यास दुरुस्ती से बन सक्ता है, बशर्ते कि थोड़ा बहुत शौक़ दर्शन मालिक कुल्ल और अपने जीव के कल्यान का दिल में मौजूद होवे ॥

६—राधास्वामी मत में जो अभ्यास मुक़र्रर है, वह अपने घट में करने का है। बाहर मुख कार्रवाई सिवाय सतगुरु और प्रेमी जन के सतसंग और बानी के पाठ के किसी क़िस्म की जारी नहीं है ॥

७—अंतर मुख कार्रवाई दो क़िसम की है, एक मन और सुरत का समेटना और जमाना सुरत के असली मुक़ाम पर पिंड में, और दूसरे चढ़ाना मन और सुरत का शब्द को सुन कर। पहिली कार्रवाई को सुमिरन और ध्यान कहते हैं, और दूसरी को भजन। इन दोनों की तरकीब उपदेश के वक़्त समझाई जाती है ॥

८—राधास्वामी मत में प्रेम की मुख्यता है, यानी जब तक कि परमार्थी के हिरदे में थोड़ा बहुत प्रेम कुल्ल मालिक के चरनों का, और संत सतगुरु में, न होगा, तब तक सतसंग बाहर का और शब्द का अभ्यास अंतर में दुरुस्ती से नहीं बनेगा ॥

९—राधास्वामी दयाल की बानी और बचन में बराबर प्रेम की महिमा, और प्रेम की हालत का अपने अपने दरजे के मुवाफ़िक़, ज़िकर है। उसके पढ़ने और सुन्ने से थोड़ा बहुत प्रेम हिरदे में जागता है, और ज़्यादातर सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा से, और भी सच्चे प्रेमियों की हालत और भक्ती की कार्रवाई देख कर प्रेम बढ़ता है, और दिन २ नवीन शौक़ पैदा होता है ॥

१०—जिस मत में कि मालिक के चरनों का प्रेम नहीं है, वह मत ख़ाली है, और जिस घाट में कि प्रेम नहीं, वह भी ख़ाली है ॥

११—बग़ैर प्रेम या शौक़ के कोई शख़्स कुछ काम संसारी या परमार्थी नहीं कर सक्ता, और न बग़ैर प्रेम के किसी के हिरदे में पूरी सफ़ाई हो सक्ती है ॥

१२—मालिक के चरनों का प्रेम बड़ी भारी दौलत है। जिस किसी को यह दौलत थोड़ी सी भी मिली

वही मालिक का मंज़ूर नज़र हो गया और उसी का परमार्थी भाग जागा और उद्धार का रास्ता जारी हुआ ॥

१३—जहां प्रेम है वहां हमेशा ख़ुशी और आनंद है, और जहां प्रेम की हान है, वहां सदा दुख और कलेश और बिरोध का बासा है ॥

१४—जहां सच्चा प्रेम है, वहीं सच्ची दीनता और सेवा है, और वहीं हर तरह की ताक़त और शक्ती हर वक़्त मौजूद है ॥

१५—माया और माया के पदार्थ सुरत और मन की धार को अपनी तरफ़ खैंच कर सोख जाते हैं, और जो उनमें प्रीत आती है उसका नाम मोह है। यह परमार्थ की तरफ़ से हटाने वाला, और माया के जाल में फँसाने वाला है ॥

१६—मान और अहंकार और ईर्षा परमार्थी प्रेम के सुखाने वाले हैं, और क्रोध और बिरोध को पैदा करते हैं। सच्चे परमार्थी को इन बिकारों से बचते रहना चाहिये ॥

१७—यह प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दात है। जिस किसी को वे दया करके इसका किनका बख़्शें वही जीव बड़भागी है,

और उसी से सुरत शब्द मारग का अभ्यास आसानी से बन पड़ेगा ॥

१८—इस वास्ते सब जीवों को लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों का खोज लगावें। जब वे मिल जावेंगे तो सब काम परमार्थ का आहिस्ते २ बन जावेगा ॥

बचन--४

आदि में शब्द प्रघट हुआ, शब्द से ही कुल्ल रचना हुई, और शब्द ही सब की रक्षा और सम्हाल कर रहा है। शब्द से ही सब कारज सिद्ध होते हैं ॥

१—आदि में शब्द प्रघट हुआ और शब्द से ही कुल्ल रचना हुई, यानी जैसे कि शब्द की धार उतर कर, रास्ते में जगह २ ठहरती और मंडल बांध कर रचना करती आई, वैसे ही रचना का बिस्तार होता गया ॥

२—पहिले दरजे में हंस और परम हंस और दूसरे दरजे में ब्रह्मसृष्टी यानी ईश्वर कोटि और तीसरे दरजे में देवता और मनुष्य और चारखान की रचना हुई ॥

३—शब्द से मतलब उस आवाज़ से है जो चेतन्य की धार के साथ हो रही है। वही आवाज़ हुक्म और नाम और आकाशबानी और आवाज़ आसमानी और कलाम इलाही यानी मालिक की आवाज़ कहलाती है॥

४—इस आवाज़ का बहुत भारी असर है, यानी वही चेतन्य की शक्ती और उसका ज़हूरा और निशान है। जहां शब्द है वहीं चेतन्य प्रघट है, और ज़हां शब्द गुप्त है वहीं चेतन्य भी गुप्त है॥

५—हर एक मुक़ाम का शब्द उस लोक या मंडल की रचना में व्यापक है, और उसी के असर से कुल्ल कार्रवाई उस लोक या मंडल के रचना की जारी है॥

६—बच्चा जब पैदा होता है तब वह अपने हमजिन्स यानी माता पिता भाई बहन और कुल कुटम्बी और रिश्तेदार और दोस्त आशना और बिरादरी वग़ैरह का शब्द सुनकर, उन्हीं के मुवाफ़िक़ कार्रवाई सीखता और करता है। इसी तरह जानवरों के बच्चे भी अपने मा बाप और हमजिन्स की बोली सुनकर सीखते हैं, और उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करते हैं॥

७—अब समझना चाहिये कि मा बाप का शब्द सुनकर और मानकर, बच्चे क़ाबिल इसके होते हैं कि

उस्ताद् के पास जाकर उसका शब्द सुनें और मानें ताकि बिद्या अच्छी तरह आजावे और बुद्धी जाग उठे ॥

८—इसी तरह जिस किसी ने उस्ताद् के शब्द को चित्त से सुना और माना, वह पढ़ लिख कर होशियार और क़ाबिल इस बात के हो गया, कि राजा और हाकिम का संग करके बन्दोबस्त देशों और बहुत से जीवों का कर सके। और मुल्क् का और घरों का इन्तज़ाम इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ दुनिया में जारी है ॥

९—इसी तरह इन लोगों में से जो कोई सच्चे गुरु के सतसंग में गया, और उनका बचन सुना और माना, वह प्रेम की दौलत पाने का मुस्तहक़ हुआ यानी दिन २ प्रीत और प्रतीत उसकी मालिक के चरनों में बढ़ती जावेगी, और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, जिस क़दर फ़ासला कि माबैन इस जीव और कुल्ल मालिक के धाम के वाक़ै है, तै होता जावेगा। यानी एक दिन वह ऊंचे से ऊंचे देश में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, और काल और माया के जाल से निकल कर, कष्ट और कलेश और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से क़तई छुटकारा उस का हो जावेगा ॥

१०—सुरत शब्द के अभ्यास से मतलब यह है, कि

अंतर में ऊंचे देश के चेतन्य का शब्द सुनता हुआ अभ्यासी निज धाम में जहां से कि आदि में शब्द प्रगट हुआ पहुंच जावे। यानी शब्द की डोरी को पकड़ कर एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम पर चढ़ता चला जावे ॥

११—हर जगह रचना में कार्रवाई शब्द यानी चेतन्य की है। शब्द से ही प्रेम और ज्ञान यानी समझ बूझ और प्रीत प्रतीत हासिल होती है, और शब्द से ही ईर्षा बिरोध और बिकारी अंग पैदा होते हैं, क्योंकि कुल्ल रचना दयाल और काल की शब्द ही के वसीले से पैदा हुई है और जारी है ॥

१२—जिस किसी का मन दुनिया का हाल नाश-मानता का देख कर ठंढा हुआ है, और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बच कर परम आनंद के धाम में बिश्राम चाहता है, उस को मुनासिब है कि संत सतगुरु की सरन लेकर उनके सतसंग में शा-मिल होवे, और काल और दयाल का भेद समझ कर काल अंग और काल देश को त्यागता हुआ दयाल देश की ओर चले और दयाल शब्द की डोरी पकड़ कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज धाम में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे। यानी इस

लोक के शब्द को जो माया के पदार्थों में लुभाने-वाला और फँसाने और अटकाने वाला है, छोड़ कर दयाल देश यानी अपने निज घर की सुध ले कर माया के घेर से निकलने का जतन शुरू कर देवे तो संत सतगुरु की मेहर से एक दिन निज धाम में बासा पा जावेगा ॥

१३—मालूम होवे कि हर मुक़ाम और हर एक हालत और सूरत में कुल्ल कार्रवाई शब्द की है, चाहे दयाल का होवे या काल का। इस वास्ते सच्चे परमार्थी लोगों को चाहिये, कि शब्द २ का भेद समझ कर और मन और माया की कार्रवाई से बच कर दयाल देश में पहुंचने का इरादह करें ॥

दयाल देश में पहुंचाने वाली धार जुदी है और काल देश में भरमाने और भटकानेवाली धार जुदी है। इनका भेद संत सतगुरु के सतसंग में मिलेगा, और उन्हीं की मेहर और दयाः से जीव काल और माया के जाल से निकल कर पार जावेगा, और कोई जतन और जुगत बचने की नहीं है ॥

१४—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले खोज संत सतगुरु या उन की संगत का करके उस में शामिल होवें, और सुरत शब्द

मारग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें तब उनका काम आहिस्ते २ संत सतगुरु की मेहर से बन जावेगा, नहीं तो माया के घेर में पड़े रहेंगे, और चौरासी में भरमते रहेंगे ॥

बचन--५

सुरत का जगत में उतार और फंसाव और जगत उस के उद्धार यानी चढ़ाव की घर की तरफ़ ॥

१—आदि में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से शब्द की धार प्रघट हुई, उसी धार का नाम आदि सुरत है। यह धार जगह २ मंडल बांध कर रचना करती हुई नीचे उतरी, और तीसरी दरजे यानी मलीन माया के देश में पिंड के नाके पर जिस को छठा चक्र और तीसरा तिल कहते हैं ठहरी। और फिर वहां से एक धार नीचे के चक्रों में उतर कर गुदा चक्र के अस्थान पर ठहरी और दो धारें दोनों आंखों में आईं और वहां बैठ कर देह और दुनिया का काम देने लगीं और इंद्रियों द्वारा भोगों और अनेक पदार्थों में रसी और फंसी ॥

२—जो कि क़ानून क़ुदरत का सब जगह यकसां

जारी है, इस वास्ते बाहर और पिंड के अंतर रचना एक ही तौर पर हुई। और सुरतें इस लोक में देहियों में बस कर, कुटम्ब परिवार और अनेक भोगों और पदार्थों में फंस गईं और जहां २ उन के मन का बंधन हो गया, वहां से दुख सुख का भोग करने लगीं ॥

३—जहां मन की प्रीत या तवज्जह होती है वहीं इस की धार आती जाती है, और जब २ उस के प्यारे जीव या वस्तु में कुछ ख़लल या बदल पैदा होता है उस वक़्त जो वह मन के मुवाफ़िक़ है तो सुख, और जो नामुआफ़िक़ है तो दुख, मालूम होता है। और जहां मन की तवज्जह और लाग नहीं है या पहिले थी और फिर हट आई, वहां चाहे जैसी हालत बदले उसका असर नहीं मालूम होता ॥

४—इस्से ज़ाहिर है कि जिस क़दर मनके बंधन या मोह या पकड़ें हैं, उसी क़दर उसकी लाग या मानन के मुवाफ़िक़ हालत बदलने पर, एक दूसरे को दुख या सुख का असर पहुंचता है, यानी विशेष करके इस दुनियां में दुख सुख मानन का है ॥

५—कुल्ल जीव अपने रोज़मर्रह के बर्ताव से इस बात की जांच कर सक्ते हैं, कि संसार में दुख सुख का भोग बिशेष करके मन के मानन का है। यानी

जहां २ और जिस २ में मन की लाग या बंधन है, सो जब २ वहां और उस में किसी क़िसम की नई हालत पैदा होवे कि जिस के सबब से दुख या सुख व्यापे, तो प्रीत करने वाले को भी उस क़िसम का दुख सुख व्यापेगा। और हाल यह है कि लगन वाले की देह या सामान में किसी क़िसम का हर्ज़ मर्ज़-वाक़ै नहीं हुआ, वह हालत उसी शख़्स या चीज़ पर गुज़री कि जिस में उसकी लाग थी ॥

६—देह का दुख सुख असली माना जाता है मगर जो ग़ौर करके देखा जावे, तो यह भी जिस क़दर मन की धार उस अंग में आती जाती है, उसी क़दर उस अंग में लाग है, और उसी क़दर वक़्त तकलीफ़ या आराम के उसका दुख सुख मन और सुरत को व्यापता है, यानी यहां भी बहुत से मुआमलों में दुख सुख मानन ही का है। जैसे एक शख़्स बुख़ार या कोई और बीमारी से बीमार है और चारपाई में पड़ा हुआ है, लेकिन इसी वक़्त उसके किसी ख़ास प्यारे की तबिअत सख़्त बीमार हो गई, तो उस वक़्त वह शख़्स अपनी बीमारी को भूल कर फ़ौरन उठ बैठता है, और अपने प्यारे के मुआलजे में तवज्जह और मदद करता है। सख़्त बीमारी या निहायत दरजे

की ज़ोफ़ की हालत में, शायद यह बात किसी २ से जिसका बंधन देह में बिशेष है, न बन पड़े ॥

७—सिवाय इस के ऐसी सूरत में कि जब किसी का कोई मतलब ख़ास या काम बनता होवे, या कोई सख़्त तकलीफ़ और बला दूर होनी मुमकिन होवे, तो जो कोई तकलीफ़ कम दरजे की आन कर पड़े, तो लोग उसकी सहज में बरदाश्त करते हैं, और कोई शिकायत किसी क़िसम की नहीं करते। या कोई शख़्स कुछ बीमार है और उस पर सख़्त और भारी मुसीबत या सदमा नाज़िल होवे, तो अपनी बीमारी को फ़ौरन भूल कर, उस सदमे के रंज में शामिल और गिरिफ़्तार हो जाता है। इन सब सूरतों में साफ़ नज़र आता है कि दुख सुख मन का मानन है, और मन की धार के लाग और बंधन का नतीजा है, और जब जहां से लाग घट गई या दूर हो गई, यानी मन का बंधन नहीं रहा और धार की आमदरफ़्त मौक़ूफ़ हो गई, या कि तवज्जह दूसरी तरफ़ हो गई, फिर वहां कैसा ही दुख या सुख पैदा होवे, उसका असर प्रीत और लाग छोड़ देने वाले शख़्स को बिल्कुल नहीं पहुंचता ॥

८—और भी देखने में आता है कि जब किसी के मन की धार को जो एक तरफ़ जा रही है बदल दिया-

जावे, तो फ़ौरन उसकी हालत भी बदल जाती है। जैसे कोई बालक खेलते हुए गिर पड़ा और ख़फ़ीफ़ चोट भी आई और रोनेलगा, मा बाप ने फ़ौरन कोई खिलौना या बाजा उसको दिखला कर उसकी तवज्जह या धार को खींच लिया, तब फ़ौरन रोना बंद हो गया, और उस खिलौने या बाजे को देखकर बालक मगन हो गया ॥

९—इसी तरह जब कोई शख़्स फ़िकर या रंज या चिन्ता में बैठा हुआ है, और उसी वक़्त कोई ख़ास ख़ुशी की ख़बर आई, तो वह फ़ौरन उस दुख या चिन्ता को भूल जाता है और ख़ुशी मनाता है, यानी मन की धार फ़ौरन बदल जाती है, और उसी मुवाफ़िक़ लाग का भी फल बदल जाता है ॥

१०—अब ग़ौर करना चाहिये कि इस दुनिया में सब जीवों की लाग कुटम्ब परिवार और बिरादरी और अनेक तरह के दुनिया के सामाना में हो रही है, और यह सब नाशमान हैं यानी हमेशह बदलते रहते हैं। फिर जो कोई इन में प्रीत करेगा जब २ उनकी हालत बदलेगी या अभाव हो जावेगा, तब तब उस शख़्स को अपनी लगन यानी मन की धार के मुवाफ़िक़ सुख या दुख ब्यापेगा ॥

११—अक़लमंद और बिचारवान को चाहिये कि ऐसे पद या बस्तू में चित्त लगावे, कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहे, और जिस्से मेल करने से दम दम रस और आनंद और शौक़ बढ़ता जावे। और एक दिन उस्से मिलने या उसके निकट पहुंचने पर महा चेतन्य महा प्रेम महा आनंद और महा सुख का भंडार खुल जावे, और जिसकी तरफ़ तवज्जह करने से दुनिया और देह के दुख सुख आहिस्ते २ बिसरते जावें ॥

१२—ऐसा पद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनका धाम है जो सब रचना के परे और निर्मल चेतन्य देश है। और जोकि सब जीव आदि में उसी पद से आये हैं, इस वास्ते जब तक कि अपने निज घर में उलट कर न जावेंगे, तब तक सच्चा और हमेशह का सुख प्राप्त नहीं होगा ॥

१३—जोकि कुल्ल रचना की कार्रवाई धारों के साथ है, और देहियों की कार्रवाई भी मन और इन्द्रियों की धार के साथ होती है, इस वास्ते जिस कार्रवाई के फल या नतीजे को बदलना मंज़ूर है, तो उस धार का जिसके वसीले से वह कार्रवाई होती है, रुख़ बदलना चाहिये ॥

१४—इस दुनिया में कुल्ल कार्रवाई जीवों की मन

और इन्द्रियों की धार के वसीले से होती है, और जोकि यह सब रचना बाहर है, इस वास्ते सब धारों का रुख़ बाहर की तरफ़ है, और इनकी कार्रवाई से दुख सुख का फल मिलता है। और जो इससे बचना मंज़ूर है तो इन धारों का रुख़ बदलना चाहिये, यानी अन्तर में अपने घर की तरफ़ मोड़ना चाहिये क्योंकि वह घर सुख का भंडार है और जो सुरत की धार वहां से आई है, वह भी सुख और आनंद स्वरूप है। जो इस धार का रुख अंतर में ऊपर की तरफ़ मोड़ा जावे, तो जिस क़दर चाल चलेगी ज़्यादह से ज़्यादह सुख मिलता जावेगा, और एक रोज़ महा सुख के भंडार में पहुंचकर हमेशह को बिश्राम मिलेगा ॥

१५—इस बात का इमतहान अपनी हालत की जांच से हो सक्ता है, यानी एक उस हालत को देखो, कि जब धारें मन और इन्द्रियों की बाहर के कामों में बिखर रहीं हैं, और दोनों क़िस्म की कार्रवाई एक मनके मुवाफ़िक़ और दूसरी नामुवाफ़िक जारी है, और दूसरी हालत को परखो कि जो इन धारों का रुख़ फेरने, और मन और सुरत की धार के साथ शामिल करके, अंतर में ऊपर की तरफ़ चढ़ाने से पैदा होती है। पहिली हालत में दुख सुख का भोग होता

है, और दूसरी हालत आनंद और सरूर की है, जो स्वरूप या रोशनी का दर्शन करके और शब्द को सुनकर हासिल होती है ॥

१६—जो कोई इस तरह पर धार को बदलने की तरकीब जानता है और उसका अभ्यास करता है, वह संसार और उसके दुख सुख से जब चाहे अपना थोड़ा बहुत बचाव कर सक्ता है, और अंतरी आनंद ले सक्ता है। इसी का नाम सच्चा परमार्थ है, यानी देह और दुनिया के बंधन और दुख सुख से आहिस्ते २ छुटकारा होना और घट में आनंद का प्राप्त होना ॥

१७—यह परमार्थ सब जीवों को कमाना चाहिये, बग़ैर इसके किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा। इसके सिवाय जितनी कार्रवाई परमार्थ के नाम से संसार में जारी है और जिस का तअल्लुक़ अंतर सुरत और शब्द की धार से नहीं है, चाहे वह किसी क़िसम की मुद्रा या प्राणायाम का ही साधन होवे, शुभ करम का फल यानी कोई अर्सह तक सुख देवेगी, लेकिन घर की तरफ़ चाल नहीं चलेगी, और न उद्धार की सूरत नज़र आवेगी ॥

१८—यह निर्मल और सच्चा परमार्थ सिर्फ़ संत सतगुर या उनके सच्चे और प्रेमी सेवक से मिल सक्ता है,

और आज कल उसकी कार्रवाई राधास्वामी मत की संगत में, जहां तहां बहुत आसान तौर के साथ जारी है। और किसी मत में उसका भेद और तरीक़ा अभ्यास का ज़िकर भी नहीं है, बल्कि कुल्ल मत वाले बाहर मुखी परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं, जोकि शुभ कर्म में दाख़िल है ॥

१६—राधास्वामी मत में सच्चे और कुल्ल मालिक का भेद और उसके धाम की महिमा और वहां से सुरत की धार का उतार माया देश में मैं शरह अस्थानों के जहां २ वह रास्ते में ठहरती, और मंडल बांध कर रचना करती आई है, मुफ़स्सिल बयान किया है। और इसी तरह से सुरत के उलटाने का तरीक़ा बहुत आसान जुगत, यानी शब्द मार्ग के बसीले से (जिस को लड़का जवान बूढ़ा औरत और मर्द ग्रहस्त और विरक्त बिला किसी क़िसम की तकलीफ़ या ख़तरे के कमा सक्ते हैं) उपदेश किया है ॥

२०—जो कोई सच्चा परमार्थी प्रेम और दर्द लेकर राधास्वामी मत में शामिल होवे, और भजन और ध्यान का अभ्यास करे, तौ उसको बहुत जल्द अपने अंतर में, थोड़ा बहुत रस और परचा मिल सक्ता है, कि जिस से उसको इस बात का निश्चय हो जावेगा,

कि इसी अभ्यास से उसका काम दुरुस्त बनेगा, और एक दिन निज घर में पहुंच कर वहां बिश्राम पावेगा, और हमेशा के वास्ते सुखी हो जावेगा । इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर राधास्वामी मत के अभ्यास में शामिल हों । अगर सुरत शब्द मारग की कमाई जिस क़दर बन सके दिलोजान से करें, तो उनको चन्दरोज़ में ही बहुत कुछ तजर्बा इसी जिंदगी में हासिल होगा, कि जिससे उनको पूरा यक़ीन हो जावेगा, कि उनके उद्धार में क़तई शक नहीं है, चाहे दर्शन कुल्ल मालिक का ज़िन्दगी में हासिल होवे या नहीं पर उसका जलवह और प्रकाश, और शब्द जोकि निज रूप का निशान है ज़रूर नज़र आवेगा और सुनाई देगा और अख़ीर वक़्त पर मौज से संत सतगुरु आप दर्शन देकर अपने जीवों की सुरतों को गोद में बैठाकर सुख अस्थान में बासा देंगे ॥

———————

बचन–६

दुनियां की मान बड़ाई और भोग बिलास देखकर हर कोई उनकी चाह उठाता है, और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जतन करता है, और उसमें थोड़ी बहुत कामयाबी होती है, लेकिन दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और अनेक तरह के दुक्ख और मौत सब के सिर पर खड़ी देखकर बहुत कम जीव ख़ौफ़ लाते हैं, और इनमें से भी निहायत ही कम जीव कोई जतन अपने बचाव का करते हैं ॥

१—दुनिया में दौलत और लियाक़त और हुनर और गुन और हकूमत और भोग बिलास वग़ैरह देख कर उनकी चाह हर कोई उठाता है, और उनके हासिल करने के वास्ते जतन करता है, जिसमें अक्सर थोड़ी बहुत कामयाबी भी होती है ॥

२—लेकिन बहुत कम ऐसे जीव हैं कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता, और अनेक तरह के दुक्खों की तकलीफ़ और सब के सिर पर मौत को खड़ा हुआ देख कर, ख़ौफ़ मनमें लाते हैं। और इनमें से भी निहायत कम ऐसे जीव है, कि जो कुछ जतन जैसा कि अपने २ मत में जारी है करने को तैयार होते हैं, या दरियाफ़्त करके करते हैं ॥

३—पहिले तो कुल्ल जीवों की लाग और चाह मन और इन्द्रियों के भोगों में ज़बर धरी हुई है, और उनके निमित्त जो जतन कर रहे हैं, उस्से उनको फ़ुर्सत ही नहीं होती कि दूसरे काम की तरफ़ मुतव-ज्जह होवैं ॥

४—जब २ किसी को सख़्त दुखी देखा या सुना या कहीं कोई सख़्त सदमा या बला नाज़िल हुई, या यका-यक और बेवक़्त या ग़ैरमामूली मौत वाक़ै हुई, तब कुछ मन में ख़ौफ़ आता है, और इरादह भी करते हैं कि कोई जतन उनके दूर होने के वास्ते, या उनका असर कम ब्यापने के लिये करें। मनर जहां दो चार रोज़ गुज़रे और वह ख़ौफ़ हलका पड़ा, फिर कोई शख़्स खबर भी नहीं लेता कि वह जतन सच्चा क्या

है और किस्से दरियाफ़्त हो सक्ता है, और कैसे उनकी कार्रवाई की जा सक्ती है ॥

५—बाज़े जीव जो भोले और थोड़े प्रेमी हैं, उनके दिल में दुनिया का नाक़िस और उलटा हाल देखकर सच्चा ख़ौफ़ पैदा होता है, और वे वास्ते रफ़ा करने उसके, अपने मज़हब के मामूली पेशवाओं से सलाह लेकर, मामूली कार्रवाई मुताबिक़ पुरानी चाल और दस्तूर के, जैसे नाम का सुमिरन ज़बान से, और मानसी ध्यान बेठिकाने, और दान पुन्न और ब्रत और तीर्थ और पोथियों का पाठ वग़ैरह करते हैं, पर ऐसी कार्रवाई करके ज़रा भी ग़ौर नहीं करते, कि ज़िन्दगी में कुछ इसका फ़ायदा नज़र आया या नहीं और जो ज़िन्दगी में नहीं मालूम हुआ तो बाद मरने के उसके प्राप्ती की कैसे उम्मीद हो सक्ती है ॥

६—सबब इस भूल और ग़फ़लत का यह है, कि जीवों की तबिअत का सर्व अंग करके झुकाव दुनिया की तरफ़ हो रहा है, और उसके कारोबार के करने और सोचने और बिचारने से उनको बहुत कम फ़ुर्सत मिलती है कि वे दूसरी बात का ख़्याल करें ॥

७—इस में कुछ शक नहीं कि दुख और मौत वग़ैरह का चक्कर हर रोज़ प्रत्यक्ष चल रहा है और हर एक

जीव को अपनी मौत की याद दिलाता है, लेकिन यह याद भी रोज़मर्रह के हिसाब से साधारन हो जाती है, और सिवाय दस पांच मिनट के ज़्यादह देर तक उसका असर नहीं रहता ॥

८—जब कोई भारी वारदात या मुसीबत या मरी या सख़्त अकाल वाक़ै होता है, उस वक़्त जीवों के मन में भारी ख़ौफ़ और चिंता और फ़िकर अपने २ बचाव की पैदा होती है, और कोई दिन उसका ठहराव भी होता है, और इस अरसे में हर कोई जिस क़दर बन सक्ता है, ख़ैरात और दान वग़ैरह देता है और थोड़ी बहुत मालिक की याद भी करता है, और बाज़े लोग ख़ोज और तलाश निसबत मालिक और तरकीब और रास्ता उसके मिलने के करते हैं, और कोई २ दुनिया की नाश्मानता और सख़्त वाक़ै देख कर ज़्यादह डर जाते हैं और जीते जी मालिक से मिलने या मौत से निचिंत हो जाने का जतन जैसा कुछ कि दरियाफ़्त होवे करते हैं ॥

९—पिछली क़िसम के लोगों में से जिस किसी को भाग से संत सतगुरु या साध गुरू मिल जावे तो उनसे पूरा भेद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का और भी रास्ते की मंज़िलों का और जुगत

चलने की अपने घट में दरियाफ़्त करके सीधे रास्ते पर उस की चाल चल सक्ती है और फिर वही जीव एक दिन निज धाम में पहुंच कर मौत से निचिन्त और जन्म मरन के चक्कर से रहित हो कर परम आनंद को प्राप्त हो सक्ते हैं ॥

१०—बाक़ी जीवों को जो २ जिस क़दर कार्रवाई दान पुन्य और नाम का सुमिरन और ध्यान और पोथियों का पाठ और तीर्थ व्रत वग़ैरह करेंगे वह शुभ कर्म में दाखिल होकर उस के फल के एवज़ में सुख पावेंगे, पर जन्म मरन नहीं छूटेगा और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होवेगा ॥

११—सच्चे उद्धार से मतलब यह है कि सुरत यानी रूह माया देश को छोड़ कर अपने निज देश यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे। और माया देश की हद्द तीन लोक तक है जिस में पिंड और ब्रह्मंड दोनों शामिल हैं और कुल्ल मालिक का धाम पिंड ब्रहमंड के परे है, जिस को निर्मल चेतन्य देश अथवा संत और दयाल देश भी कहते हैं, वहां काल और करम और मन और माया नहीं है, और इस सबब से कष्ठ और कलेश और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी नहीं है ॥

१२—इस ऊंचे से ऊंचे धाम और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का पता और भेद सिर्फ़ संतों के पास है पर उनका मिलना दुर्लभ है। बड़भागी जीवों को अपनी दया से दर्शन देते हैं, और भेद समझाकर और जुगत चलने की बताकर उनसे रास्ता तै कराते हैं, और परम धाम में बासा देते हैं ॥

१३–इस ज़माने में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को निहायत दुखी और बल हीन देख कर अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन फ़रमाया, और भेद अपने निज धाम और उस के रास्ते और मंज़िलों का खोल कर समझाया, और जुगत चलने की इस क़दर आसान कर दी, कि हर कोई लड़का जवान बूढ़ा और मर्द चाहे विरक्त होवे या ग्रहस्त उस को बे ख़तरे और बेतकलीफ़ सहज में कमा सकें, और थोड़े दिन के अभ्यास में अपना सच्चा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देखलें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर परख लेवें ताकि पूरा इतमीनान और तसल्ली अपने सच्चे उद्धार की निसबत इसी ज़िंदगी में हो जावे ॥

१४—जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उस को यह भेद और तरीक़ा अभ्यास का आज कल राधास्वामी

संगत से आसानी से मिल सक्ता है और यही सच्चा रास्ता सच्चे और पूरे उद्धार का है। और तरीक़े रास्ते में थक कर रह गये, धुर धाम का भेद सिवाय राधास्वामी मत के और किसी मत में पाया नहीं जाता ॥

१५—ग़ौर करने की बात है कि जब सुरत रूह की बैठक जाग्रत अवस्था में आंख के मुक़ाम पर है, और वहीं से धार ऊंचे देश की तरफ़ अंतर में वक़्त सोने या मौत के खिंच जाती है, और देह और इन्द्रियां और मन फ़ौरन वक़्त खिंचने धार के बेकार हो जाते हैं, तो फिर रास्ता मुक्ती और उद्धार का इसी मुक़ाम से अंतर में जारी हो सक्ता है। बाहर जिस क़दर कार्रवाई की जावे, जो उसका सिलसिला रूह की धार से अंतर में नहीं लगा हुआ है, यानी सुरत और मन की चढ़ाई में कुछ मदद उस कार्रवाई से नहीं मिलती है, तो वह करतूत शुभ करम का फल देगी। और उस मुक़ाम पर जहां माया और मन और काल और कर्म नहीं हैं, नहीं पहुंचावेंगी और इस सबब से पूरा उद्धार नहीं होवेगा ॥

१६—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह के दुख सुख और मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी संगत में

सब जानदार उस्से नीचे और उसकी ताबेदारी करते हैं, तो जरूर उसके घट में कुल्ल मालिक का जलवह और प्रकाश ज़्यादह से ज़्यादह प्रघट है ॥

२—(१) ऐसे कुल्ल मालिक के चरनों में प्रतीत सहित प्यार और प्रीत करना हर एक जीव पर फ़र्ज़ है। (२) और जब हम देखते हैं कि हम कोई काम अपनी ताक़त से अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ वास्ते अपने सुख के नहीं कर सक्के, और जब दुख आता है तो उसको भी फ़ौरन नहीं हटा सक्के तो उस मालिक का दिल में ख़ौफ़ रखना भी ज़रूर चाहिये, ताकि हम ख़िलाफ़ उसकी मौज और मरज़ी के किसी काम में कोशिश न करें, और उदूल हुकमी की सज़ा के भागी न होवें और कोई काम ऐसा न करें कि उसके नापसंद होवे। (३) और जोकि वह सब से बड़ा और सब का मालिक और सब का हितकारी और कारसाज़ है, इस वास्ते उसके चरनों में हमेशा दीनता रखना, और जिस क़दर बने उसकी सेवा और ख़िदमत करना भी ज़रूर चाहिये ॥

३—दुनिया में जो राजा महाराजा अमीर और धनवान और हकूमतवान और विद्यावान और गुनवान और स्वरूपवान वग़ैरह होते हैं, उन की तरफ़

कुल्ल जीवों के मन में तवज्जह और दर्शनों का इरादह और दीनता और शौक़ सेवा का आपही आप पैदा होता है, फिर कुल्ल मालिक के चरनों में जो सब का रचनेवाला और पालन करनेवाला है, किस क़दर दीनता और सेवा करना मुनासिब और ज़रूरी है ॥

४—निशान प्रीत और प्रतीत का यह है, कि कुल्ल मालिक की महिमा और उस की क़ुदरत और लीला के विलास और बानी को निहायत तवज्जह और प्यार और शौक़ के साथ पढ़े और सुने। और जो कोई उस की महिमा और लीला सुनावे वह प्यारा लगे, और दिन २ शौक़ उस के दर्शन का बढ़ता जावे ॥

५—निशान दीनता और सेवा का यह है, कि कुल्ल मालिक को सर्ब समर्थ जान कर, सच्ची दीनता उसके चरनों में लावे, और जब तब वास्ते प्राप्ती दर्शनों के अंतर में प्रार्थना करता रहे, और सेवा की उमंग उठती रहे, और जो कि मालिक आप किसी चीज़ का मुहुताज नहीं है, तो जो कोई उसके बच्चों में से भूखा नंगा या बीमार होवे, उस की मदद अपनी ताक़त और फ़ुर्सत के मुवाफ़िक़ करे और जो उस के आशिक़ और प्रेमी है उनकी ख़िदमत उमंग के साथ करे।

६—कुल्ल मालिक के दर्शनों के शौक़ के साथ ही,

लीफ़ पहुँचे, न करना चाहिये, बल्कि ऐसी कार्रवाई करना मुनासिब है कि जिस्से सब सुख पावें, और जो ऐसा न कर सके तो अपने मतलब के लिये दुख देना भी मुनासिब नहीं है ॥

१२—जो कुछ ऊपर लिखा गया है यह हर एक शख़्स की ख़ास कार्रवाई से तअल्लुक़ रखता है। और जहां से जमाअत और गिरोह या कोई ख़ास क़ौम या मुल्क के बाशिंदों से तअल्लुक़ रखता है, वहां कुल्ल कार्रवाई वास्ते आम बन्दोवस्त और आम नफ़ा और नुक़सान और आम मसलहत के मुवाफिक़ की जावेगी। वहां एक २ आदमी के नफ़े और नुक़ासान का जुदा २ ख़्याल रखना मुमकिन नहीं है ॥

१३—परमार्थी शख़्स को ख़ास कर मुनासिब है, कि जो कार्रवाई दूसरों के साथ करे उस में दया और मित्र भाव पेश नज़र रक्खे, और अपने मन की हालत और ख़्वाहिश जो बरखिलाफ़ उसके न होवे, जहां तक मुमकिन होवे ग़ालिब न होने देवे ॥

३—तीसरा भाग अपने निज आपे यानी निज रूप के साथ बर्ताव ॥

१४—मालूम होवे कि निज आपा जीव का सुरत यानी रूह है, और उसकी बैठक पिंड के नाके पर

तीनों शरीर अस्थूल सूक्षम और कारन और तीनों अवस्थाओं के परे है। यह आपा कुल्ल मालिक की अंस सत् चित् आनंद स्वरूप है, और असल में सदा निरलेप और निरबंध रहता है, पर मन और इन्द्री और देहियों और पदार्थों का संग करके, इस का रुख़ बाहर और नीचे की तरफ़ मुड़ गया है, और इस सबब से दुख सुख भोगता है ॥

१५—जो कोई कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निजधाम का भेद लेकर, अपने निज आपे यानी सुरत को जो उनकी अंस है, संतों की जुगत लेकर निज घर की तरफ़ चढ़ावेगा, वही देहियों के बंधन से छूटता जावेगा, और उसी का रुख़ जो औंधा हो रहा है, सीधा होकर ऊंचे देश की तरफ़ को बदल जावेगा, और रफ़्तः २ एक दिन निज धाम में पहुंच कर बासा पावेगा, और देहियों के बंधन और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा हो जावेगा। और जो इस तरह की कार्रवाई नहीं की जावेगी, यानी मन और सुरत का झुकाव और फंसाव संसार और उसके पदार्थों ही में रहा आवेगा, तो सुरत हमेशह ऊँच नीच देही के बंधन में गिरिफ़्तार रह कर, दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में पड़ी

रहेगी । यह निहायत दरजे का ज़ुल्म अपने आपे पर है, कि जो उसको देहियों बंधन और दुख सुख के भोग से बचाया और छुड़ाया न जावे, और ऐसे ही शख़्स आतम घाती कहलाते हैं, क्योंकि जो उमर भर संसारी करतूत वास्ते प्राप्ती धन और भोग बिलास के करते रहे, और उसी की ज़बर बासना चित्त में रही, और अपने सच्चे मालिक और निज घर का भेद न जाना, तो संसारी बासना और स्वाभाविक संसारी करतूत के मुवाफ़िक़, बारम्बार देह धरकर, अपनी करनी का फल दुख सुख भोगना पड़ेगा। और यह बड़ा भारी अपराध अपनी सुरत के निसबत किया जावेगा, कि वह बजाय अपने ऊंचे देश की तरफ़ चलने के, नीचे के माया देश में गिरिफ़्तार रही आवेगी, और देहियों के साथ जनम मरन का दुख सुख भोगती रहेगी ॥

४—चौथा भाग अपने मन और देह रूप आपे के साथ बर्ताव ॥

१६—देह रूप आपा मतलब मन से है, जोकि कुटम्ब परवार और अनेक तरह के भोगों और पदार्थों और माल और असबाब में अपना बंधन ठान कर, उनके हानि लाभ में दुख सुख सहता है ॥

१७—इस दुख सुख की दो क़िसमें हैं, एक असली यानी जो अपने देह और माल से तअल्लुक़ रखता है, दूसरा मानन का कि जो दूसरे से तअल्लुक़ रखता है, और बसबब मुहब्बत के अपने को भी उसका असर पहुंचता है ॥

१८—असल में दोनों क़िसम के दुख सुख बसबब तवज्जह अपने मन की पैदा होते हैं यानी जो अपने मन की धार किसी शख़्स या किसी चीज़ में शौक़ और मुहब्बत के साथ आवे जावे, तो उस से बंधन पैदा होता है, और उस शख़्स या चीज़ की हालत बदलने में, उसका असर इस शख़्स के मन पर भी पहुंचता है ॥

और जब वही धार कोई वजह से उस शख़्स या चीज़ से दुखी या नाराज़ या नफ़रत खाकर हट आवे, तो उस शख़्स की हालत बदलने में यानी उस पर दुख सुख का चक्कर आने के वक़्त, इस शख़्स के मन पर कोई असर नहीं पहुंचता। इस्से साफ़ ज़ाहर है कि यह दुख सुख का असर सिर्फ़ मन की धार के तअल्लुक़ यानी आमद रफ़्त के सबब से है। इसी को बंधन कहते हैं, और यह असर जो पैदा होता है सिर्फ़ मानन है, यानी जो उस शख़्स या चीज़ में प्यार है, तो उस

की हालत बदलने पर असर होगा, और जो प्यार या तअल्लुक़ नहीं है, यानी आमद रफ़्त धार की बंद है, तो कोई असर नहीं होगा ॥

१६—अब ग़ौर करो कि जिस क़दर जीवों और चीज़ों में जिस किसी के मन का बंधन है, उसी क़दर उसका मन उनके सबब से दुख या सुख का असर सहता रहेगा। और जितना जिसका मन सिमट कर अपने अंतर में ऊंचे देश की तरफ़ लगता है, और दुनिया के दूसरे जीवों और चीज़ों में तवज्जह उसकी बहुत कम है या बिल्कुल नहीं है, तो उसको उसी क़दर रस अंतर में आवेगा और दुनियां का दुख सुख उसको बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं ब्यापेगा ॥

२०—असल में दुनिया के दुख सुख की जड़ बहुत कमज़ोर है, यानी उसका असर सिर्फ़ आंख के अस्थान पर बैठते वक़्त होता है, और यहां से ज़रा सरकने पर उसका ज़रा भी असर नहीं रहता। बल्कि उस शख़्स और चीज़ की, जिसके सबब से दुख सुख का चक्कर आया सुध भी नहीं रहती, कि कौन है और अपना है, या बेगाना, और ऐसे ही जिस किसी से अपना मन हट जावे, उसके दुख सुख का भी असर बिल्कुल नहीं होता। इस वजह से संतों ने संसार के

दुख सुख को भरम कहा है, यानी इस शख़्स की नाक़िस समझ से पैदा होता है, और जब हक़ीक़त मालूम हो गई तब वह आपही आप जाता रहता है ॥

२१—परमार्थी शख़्स को मुनासिब है कि जहां तक मुमकिन होवे, अपने मन को किसी शख़्स या चीज़ में ज़्यादह न बांधे, और प्रीत लगाते वक़्त भी अपने मन में समझ ले, कि इस बंधन से दुख सुख का थोड़ा बहुत असर सहना पड़ेगा। सो जब ऐसा चक्कर आवे उस वक़्त उस शख़्स की जिस क़दर मदद या सहायता हो सके कर देवे, और फिर अपने मन को चरनों में लगाकर न्यारा कर लेवे, ताकि उस में दुख सुख का ज़्यादह असर ठहरने या धसने न पावे और मालिक की मौज का ख़्याल करके, उसी का आसरा और भरोसा रक्खे, कि जो कुछ होगा वही मुनासिब और मसलहत से ख़ाली नहीं होगा ॥

२२—कुल्ल जीवों को अपने मन के निरबंध रखने की, जहां तक मुमकिन होवे कोशिश रखना चाहिये, क्योंकि बंधन से दुख सुख पैदा होता है, और यह दुख सुख परमार्थी कार्रवाई में बहुत बिघन डालना है, और संसारी ऐश और मज़े को भी कड़वा और

फीका कर देता है, और परमार्थ में भी चित्त को बिकल और गद्‌ला रखता है ॥

२३—जो कोई ऐसा नहीं करता यानी अपने मन की सम्हाल नहीं रखता, और जल्दी हर एक शख़्स या चीज़ में बंध जाता है, तो वह उपरी दुख सुख के झटके बहुत सहता है, और फ़ज़ूल और बेफ़ायदह अपने मन को खटाई में डालता है ॥

५—पांचवां भाग कुल्ल मालिक का खोज और पता लगाना, और उस के धाम में पहुंचने और दर्शन करने की जुगत दरियाफ़्त करना ॥

२४—जब कि मनुष्य को आसमानी और ज़मीनी रचना और क़ुदरत देख कर यह यक़ीन होगया कि कोई सच्चा और कुल्ल मालिक और करता इस रचना का ज़रूर है, और वह सब से बड़ा और सर्व समर्थ और महा आनंद और महा चेतन्य सरूप है, तो सिर्फ़ उस्से मिलने की चाह सब को उठाना चाहिये ॥

२५—दुनिया में राजा और महाराजा और अमीर और साहूकार और ज़रा २ से हाकमों से मिलने और उनके देखने के वास्ते, निहायत शौक़ के साथ लोग

जतन करते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं, और जब मुलाक़ात हो जाती है, तब निहायत खुश होते हैं, फिर कुल्ल मालिक से मिलने के वास्ते किस क़दर तदबीर और कोशिश करना हर एक जीव पर लाज़िम है ॥

२६—उस कुल्ल मालिक का पता और भेद सिर्फ़ संतों से या उनके प्रेमी सेवक से मालूम हो सक्ता है, इस वास्ते संतों को या उनकी संगत को तलाश करके उनसे भेद रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करना ज़रूर चाहिये, ताकि जीव जतन में लग जावें और आहिस्तः २ रास्ता तै करते जावें ॥

२७—जतन और जुगत संतों की यह है कि सुरत को शब्द में जिसकी धुन घट २ में ही रही है लगाकर अपने घट में ऊँचे देश की तरफ़ लगाना, और स्वरूप का ध्यान करके मन और सुरत को समेट कर एक अस्थान से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर चढ़ाना ॥

२८—शब्द की बराबर कोई गुरू नहीं है यानी अंतर में रास्ता दिखाने वाला और प्रकाश करने वाला इस्से बढ़कर कोई नहीं है ॥

२९—जो कोई शख़्स अपना बासा मृत्यु लोक में न चाहे, और देहियों के साथ बंधन और जो उनके

साथ दुख सुख लाज़मी है, बार २ भोगने से बेज़ार हो गया है, और कुल मालिक के धाम में पहुंच कर उसके दर्शन का बिलास और परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, उसको चाहिये कि जिस क़दर जल्द हो सके, संत सतगुर या उनकी संगत से मिल कर और उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन धुर धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

३०—और जो ऐसी कार्रवाई नहीं की जावेगी, तो जनम मरन और चौरासी के चक्कर से उसका छुट-कारा हरगिज़ नहीं होगा ॥

६—छठा भाग अभ्यास करना सुरत शब्द मारग का कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने जीव के कल्यान के फ़र्ज़ और लाज़िम है ॥

३१—मालूम होवे कि सब जीवों की सुरत यानी रूह की बैठक जाग्रत समय आंख में है, और इसी अस्थान पर बैठ कर देह और दुनिया को कार्रवाई की जाती है, और दुख सुख और चिंता और फ़िकर ब्यापता है ॥

३२—जब आंख के अस्थान से सुरत की धार

अंतर में खिंच जाती है, उस वक़्. देह और दुनिया की ख़बर नहीं रहती, जैसे सोते वक़्. या जबकि किसी फोड़े या ज़ख़्म के काटने को डाक्टर लोग शीशी सुंघाते हैं, या जब कि ग़श आ जाता है, या किसी सख़्त बीमारी के सबब से आंखें या पुतली चढ़ जाती हैं, और मरने के वक़्. भी इसी तरह पुतली खिंच जाती हैं ॥

३३—इस्से साफ़ ज़ाहर है कि सुरत की धार का खिंचाव, अंदर में पहिले आंख के मुक़ाम से होता है, और फिर सब देह में से सिमटाव शुरू होता है और मरने के वक़्. भी सुरत आंख के मुक़ाम से हट कर, और कुछ दूर तक अंतर में खिंचाव और चढ़ाई के बाद, देह छोड़ जाती है, जिसका नाम मौत है ॥

३४—जबकि पैदायश के वक़्. से सुरत का उतार मस्तक से पिंड में, ख़ास कर आंख के मुक़ाम पर, और मरने के वक़्. सिमटाव और खिंचाव कुल्ल देह ख़ास कर आंख के मुक़ाम से, साफ़ नज़राई देता है, तौ हर शख़्स पर चाहे इस्त्री होवे या पुर्ष फ़र्ज़ और लाज़िम है, कि जीते जी इस रास्ते को जिस क़दर बन सके खोले और तै करे, ताकि अख़ीर वक़्. पर

हाथ पैर पीटना और सिर धुन्ना न पड़े, यानी जम दूतों के हाथ से चोट खानी न पड़े ॥

३५—इन आंखों से साफ़ दिखलाई देता है कि जब कोई शख़्स स्त्री या पुरुष चोला छेड़ता है, तो वह कैसा ही खूबसूरत होवे चंद मिनट मरने के बाद उसकी सूरत ऐसी बिगड़ जाती है और भयानक हो जाती है, कि उसकी तरफ़ देखा नहीं जाता। यह सबूत इस बात का है, कि वक़्. चोला छोड़ने के उस शख़्स को सख़्त तकलीफ़ हुई और सख़्त चोटें खानी पड़ीं, कि जिनके सबब से चेहरे का रंग रूप बिगड़ गया और डरावना हो गया ॥

३६—बरख़िलाफ़ इसके जिस शख़्स ने राधास्वामी मत का उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास शौक़ के साथ इस ज़िंदगी में किया है, उस का चेहरा और रंग रूप वक़्. मौत के बदल कर ऐसा सुहावना और खिला हुआ और चमकता मालूम होता है कि जाने वह शख़्स ज़िंदह और निहायत ख़ुशी से भरा हुआ है ॥

३७—सबब इसका यह है कि उसके मुवाफ़िक़ हुकम सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और संतों के आंख के मुक़ाम से सुरत को अंतर में ऊंचे यानी निज घर की तरफ़ चढ़ाने का अभ्यास किया। और जिस क़दर

उसकी चाल अंतर में चली, उसी क़दर आवाज़ आसमानी उसको सुनाई दी और नूर और प्रकाश नज़र आया, कि जिस को सुनकर और देख कर वह मगन होता था और ज़्यादह कोशिश वास्ते बढ़ाने अपनी चाल के करता था और जब कि अखीर वक़्त पर कुल्ल सिमटाव और खिंचाव, मन और सुरत का ऊपर की तरफ़ को हुआ, तब शब्द भी ज़ोर शोर से गाजने लगा और नूर का भी भंडार नज़र आया, कि जिस को देख कर और सुनकर महा आनंद प्राप्त हुआ, और उस गहरी ख़ुशी का निशान चेहरे और रंग रूप पर बाक़ी रहा ॥

३८—अब मालूम होवे कि राधास्वामी अथवा संत मत का मतलब यही है कि सुरत को जो सच्चे मालिक के धाम से शब्द यानी चेतन्य की धार के साथ उतर कर, पिंड में आंख के मुक़ाम पर ठहरी है, और यहां से बवसीले और चक्रों और रगों के अंग २ में फैली है, आसमानी आवाज़ सुनकर और उँचे मुक़ाम की रोशनी दिखाकर, घर की तरफ़ को उलट कर चलाना और चढ़ाना ताकि मरने से पहिले उस रास्ते को थोड़ा बहुत साफ़ और तै करले, और आवाज़ आसमानी और क़ुदरती स्वरूप नूरानी

में उसका प्यार आजावे, और अख़ीर वक़्त पर इन दोनों की पहिचान कर के शौक़ के साथ इनकी तरफ़ को चले और परम आनंद को प्राप्त होवे ॥

३९—जो जीव कि संतों का बचन नहीं मानते और दुनियां के कामों और भोग बिलास में अपनी उमर ख़र्च करते हैं, वह अख़ीर वक़्त पर दुनिया की मुहब्बत के सबब से बारम्बार इस तरफ़ को यानी पिंड में नीचे की तरफ़ झोका खाते हैं, और काल उनकी सुरत को ऊपर को खींचता है, सो इस खैंचातानी और कशाकशी में बहुत झटके और कलेश सहते हैं, और अपने करमों और ख़्वाहशों के मुवाफ़िक़ जम दूतों के हाथों से बहुत तकलीफ़ उठाते हैं, इसी सबब से उनका चेहरा और उसका रूप रंग मौत के वक़्त विगड़ जाता है, और निहायत भयानक हो जाता है ॥

४०—अब ग़ौर करो कि कुल्ल जीवों को यह बात लाज़िम है कि नहीं, कि मरने से पहले उस रास्ते पर जहां कि काल ले जावेगा चलना शुरू करें और जीते जी थोड़ा बहुत क़ुदरत का खेल अपनी आंखों से देखें और अपने और कुल्ल मालिक के निज रूप का, जोकि नूरानी और चेतन्य शब्द स्वरूप है, थोड़ा-बहुत जलवह और प्रकाश देखकर मगन होवें, ताकि अख़ीर

वक़्त पर जब वह स्वरूप अपना प्रकाश ज़्यादहतर दिखलावे और सुरत को खींच कर अपने चरनों में लगावे, तब यह शख़्स भी निहायत मगन हो कर और निहायत शौक़ के साथ अपने मालिक के चरनों में लिपट कर ऊँचे धाम की तरफ़ चले, और पिंड को खुशी के साथ छोड़ देवे ॥

४१—सुरत के चढ़ाने का अभ्यास जो राधास्वामी मत में जारी है, उसको सुरत शब्द योग कहते हैं, यानी सुरत को आवाज़ के वसीले से ऊँचे देश में चढ़ाना और धुर मुक़ाम में जो कुल्ल मालिक का धाम है और जहां से आदि शब्द प्रघट हुआ, पहुंचा कर, परम आनंद को प्राप्त कराना । सिवाय इस के और कोई तरीक़ा कुल्ल मालिक के चरनों में पहुंचने का ऐसा आसान और रसीला नहीं रचा गया है ॥

४२—जो जीव यह अभ्यास करेंगे, यहां भी और वक़्त मौत और उसके पीछे सुख पावेंगे, और जो यह अभ्यास नहीं करेंगे, वह यहां भी दुखी रहेंगे और अख़ीर वक़्त पर और बाद मरने के महा दुख और कलेश पावेंगे, और उनके जनम मरन का चक्कर कभी नहीं छूटेगा ॥

७—सातवां भाग जरूरी उपदेश ॥

४३—अब सब को आम तौर पर समझाया जाता है, कि अपने जीव के फ़ायदे के वास्ते, थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास सुरत और मन के चढ़ाने का शब्द के वसीले से हर एक शख़्स को, चाहे मर्द होवे या औरत ज़रूर करना चाहिये। जो किसी को ज़्यादह फ़ुर्सत न मिले तो दिन रात में दो दफ़े एक २ घंटा करके, ज़रूर राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास यानी ध्यान और भजन करना चाहिये ॥

४४—यह अभ्यास कुछ मुशकिल नहीं, बल्कि इस क़दर आसान है, कि दस बारह वर्ष का लड़का और जवान और अस्सी वर्ष का बूढ़ा, बिला तकलीफ़ बैठे २ और लेटे २ कर सक़ा है ॥

४५—संजम इस अभ्यास में सिर्फ़ इस कदर हैं (१) कि मांस अहार और नशे की चीज़ खाना या पीना नहीं चाहिये (२) अपने मतलब के वास्ते किसी को दुख देना या उसका हक़्क़ मारना नहीं चाहिये (३) रोज़मर्रह खाना खाने में इस क़दर एहतियात रखना चाहिये कि भूख से दो चार लुक़मे[1] कम खावे (४) और संत सतगुर और कुल्ल मालिक राधास्वामी

१—ग्रास ।

दयाल के चरनों में सच्चा भाव और प्यार, और उनके दर्शनों की प्राप्ती के वास्ते सच्चा शौक़ और दर्द और तड़प, चाहे वह शुरू में थोड़ा ही होवे फिर दया से बढ़ता जावेगा (५) फ़ज़ूल ख़्वाहश तरक़्क़ी दुनियां की यानी ज़्यादती धन और माल और कुटम्ब परिवार और मर्तबह और हकूमत और दुनिया की नामवरी की न उठावे (६) दुनियादारों और अमीरों और धनवालों का संग ज़रूरत के मुवाफ़िक़ करे, ज़्यादह वक़ अपना इनकी सोहबत में जहां तक मुमकिन होवे ख़र्च न करे (७) परमार्थ की कार्रवाई में दुनिया दारों की, जो कि असली परमार्थ से निपट बेख़बर और नादान हैं, निंद्या अस्तुत का ख़्याल न करे (८) सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते, तन मन धन के लगाने में (जिस क़दर कि अपनी ताक़त होवे और बन सके) दरेग़ न करे, यानी कुछ सोच विचार मन में न लावे, लेकिन पहिले कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास करके जांच कर ले कि यह परमार्थ सच्चा है और सच्चे मालिक और संत सतगुरु की दया उसके साथ है ॥

४६—यह उपदेश संत सतगुरू निहायत दया और जीवों का हित करके फ़रमाते हैं, और कोई मतलब

अपनी मान बड़ाई या पूजा प्रतिष्ठा या धन और सेवा लेने का नहीं। तन और धन की सेवा जो किसी क़दर जारी है, वह भी वास्ते बढ़ाने प्रेम और भक्ति जीवों के कराई जाती है, और उसमें भी इस क़दर एहतियात् रहती है, कि हर एक अपनी उमंग और ताक़त के मुवाफ़िक़, अपनी ख़ुशी से जिस क़दर चाहे सेवा करे, किसी क़िस्म का ज़ोर या दबाव नहीं डाला जाता और न हुकम किया जाता है ॥

४७—जीवों को यह बात अच्छी तरह समझ लेना चहिये, कि उनकी देह कुल्ल रचना का नमूना है, यानी जो कुछ कि बाहर रचना में है, वह सब छोटे पैमाने के हिसाब से उनके अन्तर में मौजूद है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त भी घट में है, और उसका रास्ता भी घट में जारी है, बल्कि ब्रह्म और परमेश्वर और परमात्मा और ख़ुदा और गौड का मुक़ाम भी घट में मौजूद है। संत सतगुरु सिर्फ़ तरकीब घट में झांकने और चलने की बताते हैं, और बाक़ी कारख़ाना माया और क़ुदरत का, जिस क़दर सुरत रास्ता तै करती जावेगी आपही नज़र आवेगा, और सब मुक़ामों और दरजों को आहिस्ते २ तै करती हुई, अख़ीर में सुरत अपने

सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के सनमुख पहुंच कर, परम आनंद को प्राप्त होगी ॥

४८—अब जीवों को इख़्तियार है कि चाहे इस उपदेश को मानें या न मानें, लेकिन इस क़दर याद रखना चाहिये, कि जो इसी ज़िंदगी में अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से सरकाने और अंतर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाने का जतन नहीं करेंगे तो वे काल पुर्ष और जमदूतों के हाथ से, बहुत कष्ट और कलेश मरने के बक़. सहेंगे, और बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे, और माया देश में ऊँच नीच देश और ऊँच नीच जोनों में, अपनी बासना और करमों के मुवाफ़िक़ भरमते रहेंगे ॥

४९—जो जीव संत बचन को मान कर सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत अभ्यास इसी ज़िन्दगी में जारी कर देंगे, तो उनका परमार्थी भाग दया से बढ़ता जावेगा, और इस दुनिया में, और भी मौत के बक़., और बाद मरने के उनकी सहायता होवेगी, और जब तक धुरधाम में न पहुंचेंगे तब तक सुख स्थान में बासा पावेंगे, और दो या तीन उत्तम जनम धारन करके, वही कमाई पूरी करेंगे ॥

५०—जो राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास नहीं

करेंगे, वे अपना परमार्थी भाग घटावेंगे, और माया के देश में नीच ऊँच जोन में भरमते रहेंगे। उनका बचाव दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कभी नहीं होवेगा। इस कष्ट और कलेश और अभागता के भागी, वे आप अपनी ग़फ़लत और बे परवाही के सबब से होवेंगे। संत सतगुरु जहां तक मुमकिन है पुकार कर ख़बर देते हैं, पर जो जीव न मानें तो वे क्या करें ॥

बचन—८

और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के करम धरम यानी बाहर मुख कार्रवाई पर ज्यादः ज़ोर दिया है, लेकिन संतों ने सिर्फ़ प्रेम और शब्द अभ्यास की मुख्यता रक्खी है, इस्से सब कारज पूरा और दुरस्त बन सक्का है ॥

१—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में बहुत करके बाहर मुख कार्रवाई पर वास्ते प्राप्ती मुक्ती या उद्धार के ज़ोर दिया है, और उस कार्रवाई

का कुछ भी तअल्लुक़ सुरत की धार से, जिस की बैठक जाग्रत अवस्था में आंख के मुक़ाम पर है, नहीं है ॥

२—ऐसी कार्रवाई चाहे जिस क़िसम की होवे, उस का फ़ायदा सिर्फ़ शुभ करम का मिल सक़ा है, और मुक्ती की प्राप्ती यानी बंधनों का ढीला होना या छूटना उस कार्रवाई से मुमकिन नहीं है ॥

३—और मतों में मुक्ती का भेद कि किस मुक़ाम पर पहुंचने से, और कौन से रास्ते और किस जुगत से चलकर हासिल होगी, बहुत कम बयान किया है, बल्कि बाहर मुख कार्रवाई का ही फल मुक्ती कहा है ॥

४—राधास्वामी दयाल ने दया करके सब भेद बहुत खोल करके सुनाया है, और मुक्ती का अस्थान और जुगत उसके प्राप्ती की घट में चढ़कर और चलकर बर्णन की है, और सिवाय इसके कुल्ल मालिक के धाम का भेद मुक्त पद के परे सुनाया है। क्योंकि जब तक कि जीव अपने निज घर में जहां से कि वह आदि में आया है न पहुंचेगा, तब तक सच्चा सुखी नहीं होवेगा। इस धुर मुक़ाम का ज़िकर या भेद किसी मत में नहीं है। यह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने, जीवों पर अति दया करके, इसी ज़माने में प्रघट

किया है। और जो रास्ता तै करने की जुगत राधास्वामी दयाल ने अब बताई है, उसका भी ज़िकर या भेद और मतों में नहीं है। इस सबब से सब मतों में बाहर की कार्रवाई जारी है, और अंतर का भेद बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं है॥

५—सब मतों का सिद्धान्त माया देश यानी संतों के तीसरे और दूसरे दरजे में ख़तम हो जाता है, इस सबब से उनमें जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सक्ता॥

६—संतों का सिद्धांत पद माया देश के पार यानी अव्वल दरजे में है। जोकि वहां माया और काल नहीं है, इस सबब से वहां कष्ट और कलेश और किसी क़िसम का दुक्ख और जनम मरन भी नहीं है। वहां पहुंचने पर सुरत को सच्चा और पूरा आनंद हमेशः का प्राप्त होता है॥

७—उस अस्थान के पहुंचने का रास्ता घट में है, और आंख के मुक़ाम से जारी होता है। जिस धार पर कि सुरत उतरी है, उसी धार को पकड़ कर उलटेगी।

८—वह धार चेतन्य यानी जान और शब्द की धार है। चेतन्य यानी जान का ज़हूरा और निशान शब्द

यानी आवाज़ है, और शब्द की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला, और अंधेरे में रोशनी करने वाला नहीं है। इस वास्ते जो कोई शब्द की धुन को सुनता हुआ चलेगा, वही शब्द यानी चेतन्य की धार पर सवार होकर, और इधर से उलट कर निज घर में जा सक्ता है। और कोई तरकीब से यह रास्ता तै नहीं हो सक्ता ॥

६—कुल्ल मतों में शब्द की महिमां बर्णन करी है, और यह कि वही कुल्ल रचना की आदि और सब का करतार है। पर भेद मुक़ामों और हर एक मुक़ाम के शब्द का और जुगत उसके अभ्यास की किसी मत में साफ़ तौर पर नहीं बयान की है। इस सबब से शब्द का अभ्यास किसी मत में जारी नहीं है ॥

१०—जो किसी मत में थोड़ा बहुत अन्तर अभ्यास जारी भी है, तो वह उन धारों का है जिनका निकास और भी ख़तम होना माया देश में है, जैसे प्राण की धार रोशनी की धार वग़ैरः, और भी शब्द की धार जो कि काल के घर में जारी है ॥

११—इन धारों के अभ्यास से कोई जीव माया के देश के पार नहीं जा सक्ता, और इस वास्ते उसका पूरा उद्धार भी नहीं हो सक्ता। सिवाय इसके इन धारों

का अभ्यास ऐसा कठिन और ख़तरनाक है कि हर एक से बन्ना मुश्किल है, और ग्रहस्ती तो उसको बिलकुल नहीं कर सक्ते, क्योंकि संजम उसके बड़े सख़्त हैं ॥

१२—शब्द का अभ्यास बग़ैर रोकने प्राणों के बहुत आसानी के साथ बन सक्ता है, और चाहे ग्रहस्त होवे या विरक्त, मर्द होवे या औरत, जवान होवे या बूढ़ा, निहायत आराम और आसानी के साथ उसको कर सक्ते हैं। लेकिन शर्त यह है कि थोड़ा प्रेम यानी शौक़ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का उनके मन में पैदा होवे ॥

१३—कोई काम दुनिया का बग़ैर शौक़ या प्रेम के नहीं बन सक्ता है, ऐसे ही परमार्थ की कार्रवाई भी बिला[1] सच्चे इरादे और प्रेम के दुरस्त नहीं बन सक्ती, यानी जब तक कि कोई मुहब्बत में भर कर कुछ मिहनत नहीं करेगा, तब तक रास्ता नहीं खुलेगा ॥

१४—मुहब्बत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में चाहिये, और शौक़ उनके दर्शनों का मन में पैदा होना चाहिये ॥

१५—जब तक कि किसी के मन में किसी से मिलने

१ बिना।

का इरादा नहीं होता है, तब तक वह उसकी तरफ़ नहीं खिंचता और मिलना नहीं होता ॥

१६—जो कि कुल्ल मालिक का धाम ऊंचे से ऊंचा है, और सुरत और मन नीचे पिंड में ठहरे हुए हैं, इस वास्ते जब तक कि इनके अंतर में चाह, उस ऊंचे देश में चढ़कर पहुंचने की ज़बर पैदा न होगी, तब तक पिंड के अस्थान से सरकना मुमकिन नहीं है। और सच्ची जुगत चलने की भी मालूम होना चाहिये, और वह जुगत वही सुरत शब्द मारग का अभ्यास है ॥

१७—जिस क़दर कि मन और सुरत प्रेम अंग लेकर अभ्यास में लगेंगे, उसी क़दर रास्ता तै होता जावेगा, और थोड़ा बहुत रस मिलेगा, फिर शौक़ बढ़ेगा, इसी तरह आहिस्तः २ प्रेम और अभ्यास बढ़ते जावेंगे, और निर्मल भी होते जावेंगे ॥

१८—ऐसा अभ्यासी और प्रेमी शख़्स सतगुरु की दया से एक दिन धुर घर में पहुंच कर बिश्राम पावेगा और हमेशः को सुखी हो जावेगा ॥

१९—इस क़िसम के अभ्यास से जो संतों ने जारी फ़रमाया है, परमार्थी जीव को अपने प्रेम और अभ्यास की तरक़्क़ी का हाल जब तब मालूम होता जावेगा, और राधास्वामी दयाल की मेहर से रास्ता तै हो कर, एक दिन धुरधाम में बासा मिलेगा ॥

२०—सिवाय नेत्र के मुक़ाम के घट में सुरत शब्द मारग के वसीले से चलने के, और कोई जतन या रास्ता घर की तरफ़ जाने का नहीं है। इस वास्ते जो कोई और २ काम परमार्थी बाहर मुख कर रहे हैं, जिन का तअल्लुक़ सुरत की धार के आंख के मुक़ाम से सरकने और चलने का नहीं है, वे सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ते हैं, पर मुक्ती और सच्चे उद्धार की कार्रवाई जुदी है, और उस में वे बाहर मुखी काम कुछ मदद नहीं दे सक्ते ॥

२१—इस बात की तसदीक़ यानी जांच मरने के वक़्त की हालत सुरत के खिंचाव और पुतली के उलटाव के देखने से साफ़ हो सक्ती है, यानी उस वक़्त सुरत की धार अंदर और ऊंचे की तरफ़ को खिंचती है, और जो उस तरफ़ चलने का ज़िंदगी में कुछ अभ्यास नहीं बना है, तो अपने स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़, बारम्बार संसार और देह की तरफ़ सुरत झोके खाती है, और काल ज़बरदस्ती उसको ऊपर की तरफ़ खींचता है, और इस खैंचातानी में बहुत दुख और कलेश मरनेवाले को होता है, जैसा कि उसके चेहरे की हालत से, जो मरने पर बदल जाती है, ज़ाहर है ।।

२२—यह बात सब को अच्छी तरह से मामूल होनी

चाहिये, कि जब तक इस ज़िंदगी में घर की तरफ़ चलने का अभ्यास, राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने घट में कोई नहीं करेगा, तब तक उसका बचाव दुख और कलेश से वक़्त मौत के और भी बाद मरने के हरगिज़ नहीं होगा। और यह अभ्यास आजकल सिर्फ़ राधास्वामी संगत में जारी है, और वहीं से सच्चे परमार्थी को मिल सक्ता है ॥

बचन-९

परमार्थ की कार्रवाई इस देह और देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सक्ती है, और यह चार तरह क़ाबू में आता है, (१) ख़ौफ़ (२) लालच (३) प्यार और (४) रीस और शरम से, और या सतगुरु के संग से जो सच्चा हो कर करे, और या सरन से जो सच्चे मन से पूरे गुरू और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की लेवे, और जो कोई दुनिया

के हाल को देखकर आपही चेते वह उत्तम अधिकारी है ॥

१—यह देह और देश यानी दुनिया दोनों नाश-मान हैं, और बहुत कम काम यहां ख़्वाहश के मुवाफ़िक़ बन्ते हैं, और सुख दुख भी यहां का तुच्छ और छिन भंगी है, चाहे जैसा सामान कोई जमा करे, पर जीव के संग कुछ नहीं जाता, सब यहां ही पड़ा रहता है ॥

२—समझवार आदमी ऐसी हालत दुनिया की देख कर, ज़रूर दरियाफ़्त और खोज करेगा कि इस रचना का करता कौन है और कहां हैं, और कोई परम सुख अस्थान भी है, जो सदा एक रस क़ायम रहे, और वह कहां है और कैसे मिले ॥

३—ऐसे खोजी को सिवाय संतों की बानी और बचन के और कहीं शान्ती नहीं आवेगी, और उन्हीं की संगत में उसको भेद कुल्ल मालिक और निज घर का, और उसका रास्ता अपने घट में, और तरीक़ा उस के तै करने का, मालूम पड़ेगा ॥

४—जब ऐसा खोजी संतों की संगत यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के सतसंग में आवेगा, उसको स्वार्थ और परमार्थ यानी दुनिया और दीन दोनों का हाल मुफ़स्सिल, और उनकी क़दर और

क़ीमत मालूम पड़ेगी, और यह भी ख़बर पड़ेगी कि सिवाय सुरत शब्द मारग के, और कोई जुगत या तरीक़ा रास्ते को तै करके, निज घर यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुंचने का मुतलक़ नहीं है, और यह कि इस अभ्यास के साथ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया हर वक़्त शामिल है, और अभ्यासी की हर तरह से सम्हाल और रक्षा धुर से होती है ॥

५—बड़भागी वह जीव हैं जो सच्चे मन से अपने परमार्थ के बनाने के वास्ते, राधास्वामी संगत में दाख़िल होकर अभ्यास में लग गये हैं, और थोड़ा बहुत अंतर में रस लेते है, और दिन २ चरनों में राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जाते हैं ॥

६—ऐसे परमार्थी जीवों को उत्तम अधिकारी कहते हैं। उनके मन में संसार की सख़्ती और सुस्ती और नाशमानता और ख़ौफ़नाक और सख़्त मुसीबत की कार्रवाई क़ुदरत की देखकर, आपही आप बिचार और दुनिया से बैराग, और कुल्ल मालिक के चरनों में अनुराग पैदा होता है। और संत सतगुरु का संग भी उनको जल्द प्राप्त होता है, और उनके बचनों के

मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी, वेही अधिकारी जीव बहुत ख़ुशी और उमंग के साथ करते हैं, और उस में उनको थोड़ी बहुत कामयाबी भी जल्द होती जाती है ॥

७—दूसरी क़िसम के जीव वे हैं कि थोड़ी चाह परमार्थ की लेकर, मौज से संतों के सतसंग में शामिल होकर और बचन बानी को समझ कर, संतों और उनके प्रेमी भक्तों की दया और मदद लेकर, अपने मन और इंद्रियों की सफ़ाई और गढ़त जिस २ तरकीब से संत बतलावें करते हैं, और उनकी जुगती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, दिन २ उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं, और परमार्थ की महिमा और क़दर जानकर, उसकी प्राप्ती के लिये कोशिश करते हैं, और संसार और उस के सामान की तरफ़ से आहिस्ते २ हटते जाते हैं। इन जीवों पर भी संत सतगुरु दया फ़रमा कर, उन का परमार्थ आहिस्ते आहिस्ते बनाते हैं ॥

८—इन जीवों का मन संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग करके, और उनकी रहनी बर्तावा देखकर थोड़ा बहुत क़ाबू में आता है, और उन्हीं के मुवाफ़िक़ आप भी कार्रवाई शुरू कर देता है। इस तरह स्वभाव और रहनी के बदलने में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़

नहीं होती, बल्कि ख़ुशी और उमंग के साथ संतों की रहनी के मुवाफ़िक़, हर कोई अपनी रहनी दुरस्त करने को तइयार होता है। जो भाग से संग कोई दिन मिलता रहा, तो हालत जीव की बहुत बदलना मुमकिन है ॥

९—तीसरी क़िसम के जीव वे हैं जो किसी मतलब या दबाव से संतों के सतसंग में आ गये, और ब वजह ख़ौफ़ या लाचच या प्यार या मुहब्बत या दूसरों की रीस करके भक्ती के अंगों में बर्ताव करने लगे ॥

१०—हरचंद ख़ौफ़ और लालच और प्यार इन लोगों का संसारी मतलब और संसारी अंग लेकर पैदा हुआ था, पर कुछ अर्सह सतसंग में रहने और प्रेमी जन के साथ मेल और सेवा करने से उन पर दया हो गई, और वह अंग उनका परमार्थी हो गया, यानी परमार्थी ख़ौफ़ और परमार्थ के प्राप्ती की चाह और परमार्थी मुहब्बत दिल में पैदा हो गई। और उसके मुवाफ़िक़ सच्ची कार्रवाई सच्चे परमार्थ की जारी होगई, यानी उनके मन में परमार्थी भाव पैदा होगया ॥

११—इस क़िसम के जीवों को अपने परमार्थ के बनाने में दिक़्क़त और तकलीफ़ बहुत होती है, क्योंकि

शुरू में बहुत दिन तक उनकी कार्रवाई स्वार्थी होती है, और जब बचन सुन कर और प्रेमी जनकी मदद और संत सतगुरु की दया से उनका असली मतलब समझ कर, उनका संसारी अंग साथ परमार्थी ख़्वाहश के बदलता है, तब से उनकी कार्रवाई निर्मल परमार्थी समझी जाती है, और उसका फल भी यानी निर्मल प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में दया से मिलता जाता है, और जिस क़दर सच्चे परमार्थ और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की पहिचान होती जाती है, उसी क़दर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है, और सरन दृढ़ होती जाती है, कि जिसके वसीले से सहज में उद्धार जीव का हो जाता है ॥

१२—ऊपर जो लिखा गया कि ख़ौफ़ और लालच और प्यार और रीस या शरम से जीव परमार्थ में शामिल होते हैं, सो इस का हाल यह है कि क्या स्वार्थ और क्या परमार्थ दोनों सूरत में यह अंग जीव से कार्रवाई शौक़ और मिहनत के साथ कराते हैं। और जब तक यह अंग न होवें यानी ख़ौफ़ और लालच वग़ैरः न दिखलाये जावें, और थोड़ी बहुत मुहब्बत और एक दूसरे के साथ रीस पैदा न

की जावे, तब तक जीव परमार्थ के सीधे रास्ते और सहज जुगत को क़बूल नहीं करते, यानी उनका मन सचौटी के संग बर्ताव नहीं करता ॥

१३—कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास करके इन जीवों के मन में सच्चा ख़ौफ़ चौरासी और नरकों के दुक्खों का और जनम मरन के कष्ट और कलेश का पैदा होता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम और शब्द की महिमां सुन-कर, सच्ची चाह उनके दर्शन और अभ्यास के आनंद के प्राप्ती की उपजती है, और संत सतगुरु और प्रेमी जन से प्रीत दिन २ बढ़ती जाती है, और प्रेमी सत संगियों की अंतर और बाहर हालत देख कर, मन में सच्ची चाह या रीस उन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने की पैदा होती है, इस तरह दिन २ मन की परमार्थी गढ़त होकर वह जीव संत सतगुरु की दया और मेहर का अधिकारी बनता जाता है ॥

१४—कुल्ल जीव चाहे किसी क़िसम के हों सरन के अधिकारी हैं, यानी बिना कुल्ल मालिक और सर्ब समर्थ राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के सरन के किसी जीव का कारज नहीं बन सक्ता ॥

१५—उत्तम अधिकारी के मन में शुरू से ही प्रीत

और प्रतीत सतगुरु और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की पैदा होगी, और उस के साथ ही सरन भी दृढ़ होती जावेगी ॥

१६—दूसरे दरजे के अधिकारी जीवों को कोई दिन सतसंग करके, थोड़ी बहुत पहिचान संत सतगुरु की आवेगी, और महिमा कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की चित में बसेगी, तब वह आहिस्ते २ सरन में आवेंगे, और प्रीत और प्रतीत चरनों में लावेंगे ॥

१७—बाक़ी जीवों को ख़ास कर ज़रूरत सरन की है, क्योंकि उनसे जैसा चाहिये मन की गढ़त और सफ़ाई जल्द नहीं हो सकेगी। इस वास्ते इधर अपनी कम लियाक़ती और निबलता और उधर मन और माया का ज़ोर और शोर देखकर, वास्ते अपने बचाव के समर्थ पुर्ष का दामन पक़ड़ना और उसकी ओट में आजाना बहुत ज़रूरी है, पर ऐसी सरन लेने के वास्ते भी कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास दरकार है, और कुछ सहायता और रक्षा के परचे भी, कुल्ल मालिक और संत सतगुरु दयाल की तरफ़ से मिलने चाहियें, तब प्रतीत आवेगी, और सच्चे मन से सरन ली जावेगी।

१८—कुल्ल जीवों का सरन में गुज़ारा है, मगर इस का यह मतलब नहीं है, कि भरोसा दया का रखकर

किसी क़िस्म की कार्रवाई परमार्थ की न करें। बल्कि हर एक जीव को चाहिये कि जिस क़दर बन सके सतसंग और अंतर अभ्यास करे और अपने मन और इन्द्रियों को जहां तक मुमकिन होवे रोकता और सम्हालता रहे। और संसारी पदार्थों और भोगों में ज़रूरी और मुनासिब तौर पर बर्ताव करे, तब दया आवेगी और उसका कारज सब तरह से दुरुस्त बनावेगी, और काल और करम और मन और माया के जाल से छुड़ा लेगी॥

बचन--१०

चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूर है, यानी चित्त को समझ बूझ और जांच कर लगावे, तो बंधन और तकलीफ़ नहीं होगी। मुख्यता मालिक के चरनों में रक्खे जो हमेशा का संगी है, और गौन अंग से जीवों और पदार्थों में बर्ते, जिनका संग कारज मात्र या देह के साथ है, और हमेशः ठहर नहीं सक्ता॥

१—मनुष्य का चित्त उसकी सुरत का सीस है। जिधर यह जाता है, उधर ही उसका आपा मुतवज्जह हो जाता है॥

२—जहां मनुष्य की प्रीत है वहीं उसके चित्त का बंधन है, और वहीं से जब २ प्यारे की हालत बदले दुख सुख का असर पहुंचता है॥

३—बंधनों की दो क़िस्में हैं—एक कारजमात्र यानी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ थोड़े दिन का, दूसरा देह का संगी।

४—जो बंधन कारज मात्र हैं उनसे वक़्त ज़रूरत के काम लिया जाता है, और फिर कुछ मतलब नहीं। और जो बंधन देह के संगी हैं, उनके साथ रोज़मर्रह बर्ताव या ज़िंदगी भर रहता है॥

५—पहिला यानी थोड़ी देर का बंधन हलका है, और उस्से जल्दी छुटकारा हो सक़ा है, लेकिन दूसरा बंधन भारी और मज़बूत है, और इस्से छुटकारा किसी क़दर कठिन है॥

६—दुनिया के कुल्ल बंधन अपने २ मुवाफ़िक़ दुख सुख का असर पहुँचाते हैं। जो कोई इन बंधनों के असर से बचना चाहे, उस को चाहिये कि अपने चित्त को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, जो हमेशह एक रस क़ायम हैं, लगावे। और रास्ते का

भेद और चलने की जुगत संत सतगुरु अथवा राधा स्वामी संगत से दरियाफ़्त करके, उनके धाम की तरफ़ चलना शुरू करे, ताकि निर्बंध और निचिन्त होकर एक दिन परम आनंद और महा सुख को प्राप्त होवे।

७—दुनिया और उसके भोगों और पदार्थों में चित्त उसी क़दर लगाना चाहिये कि जिस क़दर उनसे कारज लेना या फ़ायदह उठाना मंज़ूर है, ज़्यादह बंधन में ज़्यादह दुख मिलने और हमेशह की गिरिफ़्तारी का ख़ौफ़ है॥

८—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, जिस क़दर जिस किसी का बंधन होगा, यानी जिस क़दर जो कोई भाव और प्रीत करेगा, उसी क़दर और बंधन उसके ढीले होते चले जावेंगे, और उनका असर भी कम व्यापेगा। और जिस क़दर अभ्यास घट में वास्ते प्राप्ती दर्शन, और पहुंचने निज धाम के बढ़ता जावेगा, उसी क़दर अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और शौक़ बढ़ता जावेगा॥

९—जिस क़दर यह शौक़ बढ़ेगा, उसी क़दर चरनों में प्रीत और प्रतीत ज़्यादह होती जावेगी, और दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त हटता जावेगा, यानी बंधन ढीले होते जावेंगे॥

१०—आहिस्तह २ एक दिन गहरा आनंद चरनों में प्राप्त होगा, और उन्हीं के साथ सुरत का पूरा बंधन यानी प्रेम हो जावेगा, और बाक़ी के सब बंधन जो संसारी होंगे, ख़ारिज या ढीले हो जावेंगे ॥

११—अब मालूम करो कि चित्त का अटकाव दुनिया और उसके सामान और ख़ुद दुनियांदारों में दुख और क्लेश का पैदा करनेवाला है, और जब वही चित्त मालिक के चरनों में प्रेम के साथ लग जावे, तब कुल्ल दुखदाई बंधनों को आहिस्तह २ काट कर परम आनंद को प्राप्त कराता है ॥

१२—अब जो कोई अपने चित्त की सम्हाल रक्खे यानी उसको मुनासिब जगह से ज़रूरत के मुवाफ़िक़ लगावे, और बाक़ी तवज्जह अपनी कुल्ल मालिक के चरनों में रक्खे, तो उसको संसार का बंधन बहुत कम होगा और दुख सुख कम ब्यापेगा, और चरनों का आनंद दिन २ बढ़ता हुआ, एक दिन सब बंधनों से छुड़ाकर, चरनों में यानी धुरधाम में बासा देगा ॥

१३—कुल्ल जीव दुनिया में इस क़दर होशियारी से बर्त रहे हैं, कि ख़ास जगह ज़्यादह मुहब्बत, और बाक़ी जगह थोड़ी मुहब्बत या बिलकुल ज़ाहरी और ऊपरी प्यार से कार्रवाई कर रहे हैं, फिर परमार्थी

जीव भी जो चाहें और फ़ायदह उनकी समझ में आ जावे, तो संसार में थोड़ी या ज़ाहरी प्रीत के साथ, और मालिक के चरनों में अंतरी और गहरी प्रीत के साथ, बर्ताव कर सक्ते हैं, इसीका नाम गुरु मुखता है ॥

१४—जिस किसी को भाग से ऐसी दौलत यानी गुरु मुखता प्राप्त होवे, वही जीव महा बड़भागी और सब से ऊँचा और कुल्ल मालिक का महा प्यारा है। उसके वसीले से बहुत से जीव तर सक्ते हैं ॥

१५—दुनिया में देखने में आता है, कि लोग राजा और महाराजा और अमीरों के साथ बेमतलब और बेसबब प्यार और सेवा करने को तइयार रहते हैं, और जब २ मौक़ा मिलता है, तब अपनी मुहब्बत को ज़ाहर करते हैं, और सेवा करके बहुत खुश होते हैं ॥

१६—अब ख़्याल करो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में, जो उनके निज प्यारे पुत्र और मुसाहब हैं, किस क़दर मुहब्बत और सेवा करना फ़र्ज़ और लाज़िम है ॥

१७—इस मुहब्बत के वसीले से जीव का सच्चा कल्यान, यानी पूरा उद्धार होना मुमकिन है, और जब

से कि चरनों से लगे, तब से घट में रस और आनंद मिलना शुरू हो जाता है ॥

१८—और दुनिया के राजों और अमीरों से मुहब्बत करने से, चाहे दुनिया का कोई ख़ास काम बन जावे, लेकिन परमार्थी फ़ायदह किनका भर भी हासिल नहीं हो सक्ता, बल्कि जो फ़ायदह हासिल होता हो, उस में नुक़सान आनेका ख़ौफ़ है ॥

१९—हर एक जीव अपने दुनियावी और परमार्थी फ़ायदह की जांच कर सक्ता है, और यह भी ख़ूब समझता है, कि कहां और किस क़दर मुहब्बत सचौटी के साथ करनी चाहिये ॥

२०—इस वास्ते परमार्थी जीवों को कहा जाता है कि अपने जीव का सच्चा फ़ायदह यानी उद्धार ख़्याल में रख कर, जिस क़दर बन सके गहरी प्रीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में करें। गहरी प्रीत से मतलब यह है, बनिसबत और सब संसारी प्रीतों के यह परमार्थी प्रीत कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में किसी क़दर ज़्यादह होवे ताकि गुरुमुखता का दरजा हासिल हो जावे ॥

२१—राधास्वामी मत में छोड़ना घर बार या रोज़गार

का ज़रूर नहीं है, जैसे ग्रहस्ती अपने स्त्री पुत्र धन माल से गहरी प्रीत और बंधन रखता है, और नज़दीक और दूरके रिश्तेदार और बिरादरी और बहुत से लोगों से भी प्रीत करता है, और ब्योहार का बर्ताव रखता है, पर इनमें से कोई भी उस के ग्रहस्त आश्रम की कार्रवाई में हर्ज या बिघ्न नहीं डालते। इसी तरह परमार्थी जीव सतसंग करके पूरी समझ बूझ लेकर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में विशेष, और बाक़ी सब के साथ दरजे बदरजे कम यानी समान प्रीत, बग़ैर डालने किसी क़िस्म के हर्ज या विघ्न के अपने परमार्थ में कर सक्ता है, और थोड़ी होशियारी के साथ दोनों काम यानी ग्रहस्त और भक्ती अच्छी तरह से अंजाम दे सक्ता है ॥

२२—जो जीव कि निदान और बेख़बर हैं यानी सतसंग और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की महिमा नहीं जानते, और दुनिया को धोखे का अस्थान नहीं समझते, वे संसार और कुटम्ब परिवार और संसार के भोगों और पदार्थों में, सर्व अंग करके अपना चित्त लगाते हैं, और उन्हीं को अपने सुख का सबब और वसीला मानते हैं। इस सबब

७—बिना मौज और आज्ञा राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के कोई नया काम या नई बात के कहीं जारी करने का इरादा न करे ॥

८—किसी क़िस्म या किसी देश के जीवों पर वास्ते मान्ने किसी बात के किसी किस्म का दबाव न डाले और जीवों की दया हमेशह पेश नज़र रहे ॥

९—जो थोड़ी बातें सफ़ाई की ऊपर लिखी गई हैं सिर्फ़ उनके ही मुवाफ़िक़ करनी और रहनी नहीं बल्कि कुल्ल बर्तावे में अंतर और बाहर ऐसी ही सफ़ाई और रहनी दरकार है, तब क़ाबिल चढ़ाई ऊंचे देश के और खुलने अंतर दृष्टि के समझा जावे ॥

१०—यह हालत आहिस्तह २ सतसंग और अंतर अभ्यास से आवेगी, और जिस क़दर कि उसके साथ नशा पैदा होगा, वह भी हज़म होता जावेगा ॥

११—संत सतगुरु अपनी दया से हर एक सच्चे परमार्थी की सुरत को, गौन अंग से नित्त चढ़ाते जाते हैं। मुख्य अंग से इस वास्ते नहीं चढ़ाते कि फिर अभ्यासी से दूसरा काम यानी संसारी कार नहीं बनेगा, और न दुनिया के लोगों से मिलाप या मुवाफक़त बन सकेगी, बल्कि अपनी देह की भी ख़बरगीरी, जैसा चाहिये, नहीं कर सकेगा ॥

१२—निशान गौन अंग से चढ़ाई मन और सुरत का यह है, कि अभ्यासी की चाह और पकड़ संसारी पदार्थों में, और संसारी ब्यौहारों में, हलकी और ढीली होती जावेगी, और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में और भी सतसंग और अंतर अभ्यास में प्रीत और प्रतीत आहिस्तह २ बढ़ती जावेगी ॥

१३—फिर जो किसी को मुख्य अंग से पेश्तर सफ़ाई से चढ़ाया भी जावे, तो उसको कुछ फ़ायदह नहीं होगा, क्योंकि वह शख़्स फिर देह में कम उतरेगा और इसकी कार्रवाई बहुत कम और बेतरतीब करेगा ॥

१४—इस वास्ते लाज़िम यह है कि संत सतगुरु जो कुल्ल रचना के हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं, जैसे चढ़ाना जीव का मुनासिब समझें, उसी मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना चाहिये, और उसी को दुरुस्त समझना चाहिये। और जब अभ्यास करके पूरी सफ़ाई मन और इन्द्रियों की हो जावेगी, और दृष्टि में ताक़त दर्शनों की, और हिरदे में ताक़त हाज़मह और बरदाश्त गहरे नशे और आनंद की, हासिल हो जावेगी, तब वे दया करके आप उस जीव की सुरत को मुख्य अंगके साथ चढ़ावेंगे, और आंख भी खोल देंगे। उस वक़्त ऊंचे

देश की कैफ़ियत और दर्शनों का आनंद और बिलास देख कर चित्त बहुत मगन होगा, और अपने भागों को सराहेगा, और सच्चा शुकराना बजा लावेगा ॥

१५—इस बख़शिश का नाम पूरन दया है। जिस जीव पर ऐसी दया होवे वही बड़भागी है, पर कुल्ल सतसंगियों को जो सच्चे मन से परमार्थ में लगे हैं, उम्मेदवार रहना चाहिये कि इस हालत और इस दरजे की बख़शिश उन पर भी एक दिन ज़रूर होगी। इस वास्ते धीरज धरकर और दया का भरोसा पूरा रख कर, अपना अभ्यास नेम और प्रेम के साथ रोज़मर्रह करे जावें और दिन २ दया और मेहर की परख करते जावें ॥

१६—जो कोई जल्दी और शिताबज़दगी यानी उचलाचाल मचावेंगे, तो उनको नाहक़ तकलीफ़ और निरासता पैदा होगी, और दूसरों की हालत को देख कर, बिला समझने उनके अधिकार के ईर्षा और जलन पैदा होगी, और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में किसी क़दर अभाव आजावेगा, कि जिसके सबब से अभ्यास रोज़ बरोज़ ढीला और तरक़्क़ी बंद हो जावेगी, और फिर दया और मेहर भी उसी क़दर कम होती जावेगी, और अचरज नहीं कि पूरे उद्धार के होने में कई जनम का फेर पड़ जावे ॥

बचन–१२

जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है उसको चाहिये कि नीचे की लिखी हुई बातों की निरनै करके प्रतीत करे और उसी मुवाफ़िक़ चरनों में प्रीत लाकर करनी करे ॥

१—इन सात बातों की हर एक परमार्थी को निरनै करके प्रतीत करना ज़रूर और मुनासिब है ॥

(१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्बसमर्थ हैं ॥

(२) दूसरे यह कि जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है ॥

(३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है, और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रघट हुई, और नीचे उतर कर ठेके २ पर मंडल बांध कर रचना करती आई ॥

(४) चौथे यह देश माया और काल पुर्ष का है, जहां हमेशह अदलबदल होता रहता है, और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशह क़ायम नहीं रहती। इस

वास्ते इस जगह रहने की आसा बांधना, और इसको अपना वतन समझना, नहीं चाहिये ॥

(५) पांचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के सच्चे परमार्थी को, जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुंचना चाहे, और इनको संत सतगुरु कहते हैं ॥

(६) छठे संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों के संग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद अंतरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में ॥

(७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत शब्द मारग के, सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है, क्योंकि सुरत शब्द की धार के संग उतरी है, और उसी धार के संग उलट सक्ती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं ॥

२—और सच्चे परमार्थी को इन चार बातों की भी पूरी समझ लेकर कार्रवाई करना मुनासिब है ॥

(१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की, सत-संग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तबतक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेशरो यानी आगे चलनेवाला मान कर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने ॥

(२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इन्द्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी रहता है, सो मुनासिब है कि उसका फ़ज़ूल ख़र्च न होने दे, यानी बेज़रूरत और बेफ़ायदह सुरत की धार को इन्द्रियों द्वारे बाहर की तरफ़ फैलने से रोकता रहे ॥

(३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये, कि मन में फ़जूल ख़्वाहशें संसारी तरक़्क़ी और इन्द्रियों के भोग बिलास की न उठें, और जो ऐसी तरंगें पैदा होवें, तो उनको रोकता रहे ॥

(४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बेपरवाह हैं, वे किसी से कुछ नहीं चाहते, पर जो जीव उनका दर्शन उनके निज धाम में पहुंच कर करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है, कि उन के चरनों में सच्ची दीनता यानी ग़रज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा, यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा, और चाल आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी ॥

३—वास्ते दुरुस्ती से समझने उन सात बातों के जिनकी निरनय करके जीवों का प्रतीत करना चाहिये, थोड़ा बयान हर एक बात का जुदा २ लिखा जाता है ॥

४–(१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्बसमर्थ हैं ॥

सब जीव इस बात के क़ायल हैं कि कोई कुल्ल मालिक इस रचना का ज़रूर है, और वह सर्बसमर्थ है, लेकिन वास्ते दूर करने शक और संदेह किसी क़िस्म के यहां बयान किया जाता है, कि जैसे इस लोक की रचना सूरज की धार के आसरे है, ऐसे ही यह सूरज दूसरे सूरज का आधीन है, और वह सूरज तीसरे का, और वह सूरज सत्तनाम, सत्तपुर्ष का, और सत्तनामरूपी सूरज कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है। राधास्वामी पद अनंत और अपार है यानी उसके परे और कोई पद नहीं है।

५–(२) दूसरे यह कि यह जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है ॥

इसका सबूत भी ज़ाहर है। ज़रा ग़ौर करने से मालूम होगा, कि कुल्ल रचना इस लोक की और इसी तरह से कुल्ल लोकों की सुरतों यानी रूहों की की हुई है, और उन्हीं के आसरे ठहरी हुई है। और जब वे पिंड को छोड़ देती हैं, उस वक़्त पिंड यानी देह का अभाव हो जाता है, जैसे बीज से दरख़्त पैदा होता है, ऐसे ही मनुष्य के बीर्य से मनुष्य और यही हाल सब ज़ानदारों

का है हर एक जिस्म में एक २ रूह बैठ कर कार्रवाई उसकी करती है, और कुल्ल शक्तियां क़ुदरत और माया की, सुरत यानी जीव के हुकम के मुवाफ़िक़ आपस में रलमिल कर कार्रवाई पालन पोषन वग़ैरः उस देह की करती हैं। और जब कोई सुरत देह को छोड़ देती है, उस वक़्त वही शक्तियां आपस में लड़भिड़ कर उस देह को बिगाड़ देती हैं, यानी उसका अभाव हो जाता है। इस्से साबित है कि सुरत चेतन्य की शक्ती से सब रचना हो रही है, और उसी की ताक़त से ठहरी हुई है, और उसी के बियोग से उसका अभाव हो जाता है। और यह सुरत चैतन्य कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी किरन या बूंद है ॥

६–(३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है, और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रघट हुई, और नीचे उतर कर ठेके २ पर मंडल बांध कर रचना करती आई ॥

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का अस्थान आदि धाम कहलाता है। वहीं से आदि धार सुरत और शब्द की निकली, और उसी धार ने कुल्ल रचना दरजे बदरजे करी। जैसे दरख़्त के बीज़ में से जो कुला

यानी आदि धार प्रघट होती है, वही कुल्ल दरख़्त की करतार है, और उसी धार की मार्फ़त दरख़्त की रूह यानी अर्क़ सब जगह नसों में होकर पहुंचता है। इसी तरह मनुष्य और कुल्ल जानदारों की रचना का हाल, और उस के ठहराव और सम्हाल और सुरत के बियोग में अभाव की कैफ़ीयत, समझ लेना चाहिये। यानी वही आदि धार जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली, वही सब मंडलों और अस्थानों की करतार है, और वही शब्द और नूर और अमृत और जान और चेतन्य की धार है ॥

७—(४) चौथे यह देश माया और काल पुर्ष का है जहां हमेशह अदल बदल होता रहता है, और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशह क़ायम नहीं रहती। इस वास्ते इस जगह रहने की आसा बांधना और इस को अपना वतन समझना नहीं चाहिये ॥

यह हाल तग़इयुर और तबद्दुल और नाशमानता इस लोक और उसकी रचना का साफ़ इन आंखों से दिखलाई देता है। फिर समझवार आदमी को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने वतन यानी निज घर का जो राधास्वामी धाम है, पता और भेद

लेकर उस तरफ़ को चलना शुरू करे, और इस दुनिया को अपना वतन या हमेशः ठहरने का अस्थान न समझे, नहीं तो धोखा खावेगा। क्योंकि मौत सब के सिर पर गाज रही है, और एक दिन यह देह और देश और इसका सब सामान और कुटुम्ब परवार वग़ैरः ज़रूर छोड़ना पड़ेगा ॥

८—(५) पांचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के, सच्चे परमार्थी को जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुंचना चाहे—और इन को संत सतगुरु कहते हैं ॥

ज़ाहर है कि कोई काम या इल्म दुनिया का बग़ैर सिखाये उस्ताद के नहीं आता है, फ़िर सच्चा परमार्थ जो अंतर के अंतर गुप्त है, और जिस की चाल शुरू से घट में चलती है, बग़ैर समझाये और बुझाये संत सतगुरु और उन की दया और मेहर के कैसे हासिल हो सक्ता है। यह सच्चा मत जिस को राधास्वामी पंथ कहते हैं, कोई बाहर मुखी करतूत या बानी पढ़ने और पढ़ाने का काम नहीं है। पहिली चाल इस की मन और सुरत का घट में समेटना है, और दूसरी चाल मन और सुरत का निज धाम की तरफ़ चढ़ाना है। फिर सिर्फ़ बिद्यावान लोग इस मत की कार्रवाई

और महिमा और बड़ाई को क्या समझ सक्ते हैं। यह लोग तो पोथी पढ़ना और पढ़ाना और उसके मतलब को बतौर लेक्चर के लोगोंः को सुनाना परमार्थ समझ रहे हैं, और इतनी बात बिद्यावान गुरू से हासिल हो सकती है। फिर संत सतगुरु की महिमा को जो कि रूह की धार पर सवार होकर कुल्ल मालिक के धाम में आते जाते हैं, क्या समझ सक्ते हैं। सच्च तो यह है कि सिवाय संत या साध या सच्चे प्रेमी के, जोकि सच्चा खोज और दर्द परमार्थ का दिल में रखता है, और किसी की ताक़त नहीं कि संत सतगुरु की कुछ भी पहिचान करसके या उन की बड़ाई समझ सके; इस सबब से तमाम दुनिया के जीव निगुरे हैं। और जो कोई रसम और टेक के बमूजिब बंसीवली या बिद्यावान या भेषी या पंडित को गुरू मान रहे हैं, ऐसे गुरू आप निगुरे हैं, और सच्चे गुरू की महिमा से बेख़बर। इसी सबब से इन जीवों को कुछ फ़ायदह सच्चे परमार्थ का हासिल नहीं होता, और न उन के हिरदे पर सच्चे मालिक और संत सतगुरु के प्रेम का रंग चढ़ता है। सच्च तो यह है कि बिना संत सतगुरु के किसी जीव का, चाहे किसी मत में होवे, सच्चा उद्धार होना मुमकिन नहीं है॥

९–(६) छठे संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों के सत संग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद अंतरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में ॥

जैसे संत सतगुरु की ज़रूरत, वास्ते हासिल करने उपदेश और दया के है, ऐसीही ज़रूरत संत सतगुरु और उनके प्रेमीजन के सतसंग की है। बग़ैर सतसंग के मत की समझ बूझ नहीं आती है, और न दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त मालूम पड़ती है, और न परमार्थ और उसके फ़ायदे की क़दर और महिमा समझ में आती है, और न संसारी स्वभाव बदलते हैं, और न भक्ती की रीत की ख़बर पड़ती है, और न उस के मुवाफ़िक़ बर्तावा बर्त सक्ता है, और न अभ्यास दुरुस्ती और आसानी के साथ बन सक्ता है, और न प्रीत और प्रतीत की जल्द तरक़्क़ी हो सक्ती है। ख़ुलासह यह कि बग़ैर संत सतगुरु और प्रेमीजन के संग के, प्रेम का रंग जैसा चाहिये नहीं चढ़ सक्ता, और न संत सतगुरु की पहिचान जिस तरह आनी चाहिये हो सक्ती है, और न उन-की सेवा जैसी चाहिये बन सक्ती है, और फिर उनकी मेहर भी जिस क़दर दरकार है कैसे हासिल हो सक्ती है ॥

१०—(७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत सब्द मारग के सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है, क्योंकि सुरत शब्द की धार के संग उतरी है, और उसी धार के संग उलट सक्ती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं॥

शब्द की धार से मतलब चेतन्य की धार से है। कुल्ल कार्रवाई रचना वग़ैरः की इसी धार से हुई और हो रही है। इस वास्ते जब तक कि यह धार उलट कर, अपने भंडार यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में न पहुंचेगी, तब तक घट की पिंडी और ब्रहमान्डी रचना का कारख़ाना बदस्तूर जारी रहेगा, घट बदलते रहेंगे। पर सुरत की धार जब तक भेद पाकर और जुगत समझ कर अभ्यास करके यानी शब्द को सुनती हुई उलटेगी नहीं, तब तक उसका बंधन ब्रहमान्डी और पिंडी देशों में रहा आवेगा। इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह धारन करने और उसके संग दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और कलेश से बचना चाहते हैं, सुरत शब्द का अभ्यास करना ज़रूर और लाज़िम है। क्योंकि सिवाय इसके दूसरा रास्ता और तरीक़ा सुरत रूह के चढ़ाने का माया देश के पार, और पहुंचाना उसका राधास्वामी धाम में,

रचा नहीं गया। जो कोई इस अभ्यास को नहीं करेंगे, वह माया के घेर में नीच ऊंच जोनों में भरमते और दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

११—अब उन चार बातों का ज़िकर किया जाता है, जो सच्चे परमार्थी को अच्छी तरह से समझ कर भक्ति भाव में बर्तना चाहिये ॥

१२—(१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की सतसंग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तब तक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेशरो यानी आगे चलने वाला मानकर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने ॥

गुरु भक्ती के बयान में सब मतों में ख़ासकर संत मत में हुकम है, कि सच्चा और पूरा गुरू खोजकर धारन करें, और उनको परमेश्वर और सत्तपुर्ष की समान मानें। मतलब इस्से यह कि जब इस क़दर बड़ाई उनकी सेवक के चित्त में समावेगी, तब उनका बचन माना जावेगा, और भाव और प्यार बिशेष उनके चरनों में आवेगा, और सेवा तन मन धन की बन आवेगी, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है ॥

कड़ी

सेवा कर तन मन धन अरपे ॥ सत्तपुर्ष सम सतगुरु थरपे

श्लोक

गुरु ब्रह्मा गुरु बिष्णू गुरु देवो महेश्वरः ॥
गुरु रेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

शेर

चूंकि करदी ज़ात मुर्शद रा क़बूल ।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल ॥ १ ॥
मसजिदे हस्त अंदरूने औलिया ।
सिज्दहगाहे जुमलह हस्त आंजा ख़ुदा ॥ २ ॥
इज़ा तम्मुल फ़क्र फ़हो अल्लाहू ॥
ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवती ॥

और ईसाई लोग भी पोप साहिब को कमोबेश ऐसा ही बड़ा मानते हैं ॥

ज़बान से कहना और लिखे हुए को पढ़ना और उसके मुवाफ़िक़ तक़रीर करना और बात है, और सच्चे मन से यक़ीन करना इस बात का, कि सतगुरू परमेश्वर और सत्तपुर्ष हैं, और फिर इस समझ के मुवाफ़िक़ उनके चरनों में भक्ती और सेवा करना और बात है, यानी हर वक़्त और हर हालत और हर सूरत में ऐसे यक़ीन का क़ायम रहना बहुत मुशकिल है। अलबत्तह जब अन्तर और बाहर बारम्बार परचे मिलेंगे, तब यह यक़ीन पकता जावेगा, और जिस

क़दर ज़्यादः सतसंग मिलता जावेगा उसी क़दर ऐसे यक़ीन की धारना बढ़ती और मज़बूत होती जावेगी ॥

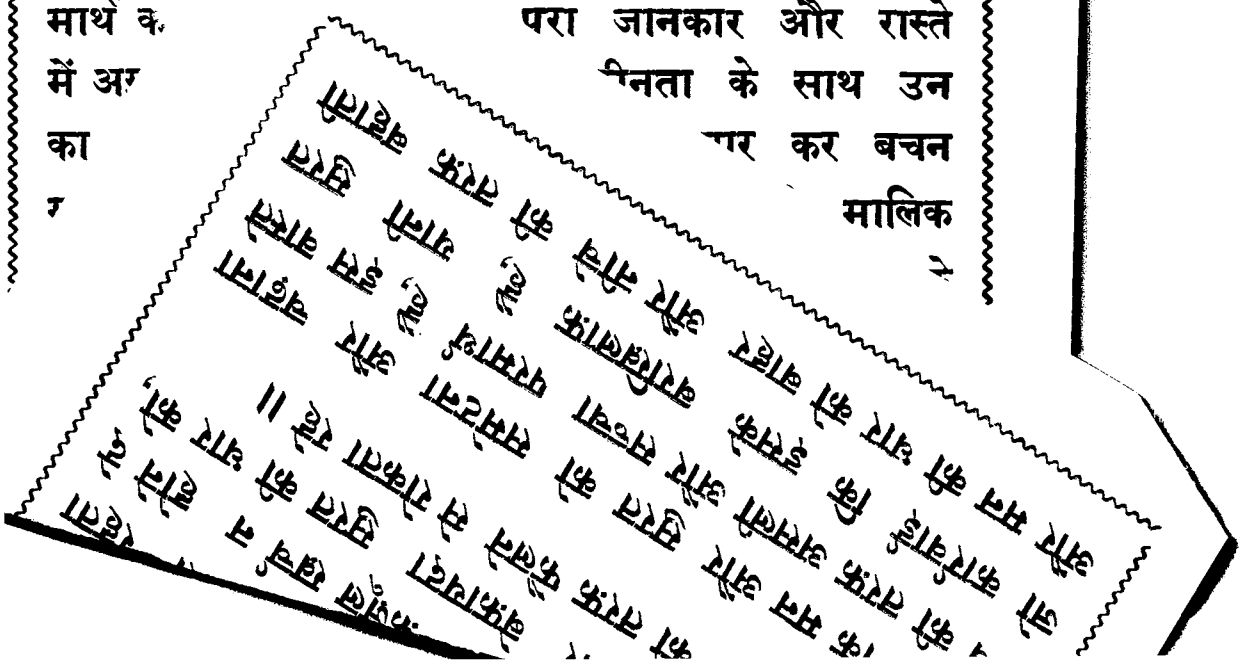

वक़्त उनके अंतर में शान्ती और सीतलता प्राप्त होती है, कि जिस्से वे फ़ौरन पहिचान सतगुरु की कर लेते हैं, कि इनकी दया और मदद से हमारा कारज बनेगा। यह पहिचान पहिले ही दिन आ जाती है, और इसके मुवाफ़िक़ वे भक्ती में लग जाते हैं, और दिन २ प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जाते हैं॥

सिवाय इसके जिस पर सतगुरु दयाल होवें थोड़ी पहिचान अपनी मेहर और दया से फ़ौरन जैसे कि जीव दर्शनों को आया बख़्श देते हैं, और अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत उसके हिरदे में बसादेते हैं, कि वह आइंदः सतसंग और अभ्यास करके दिन २ बढ़ती जाती है॥

१३—(२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इंद्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी है, सो मुनासिब है कि उनका

है, वह ज़रूर बिघन कारक समझनी चाहिये। लेकिन जो कि जीवों का अहार इसी देश के मसाले का बना हुआ है, इस वास्ते उसके ख़ुलासे का भी जो मन इंद्री और देह को ताक़त पहुंचाता है असली झुकाव बाहर की तरफ़ है। इस सबब से सुरत और मन की धार को बाहर और नीचे की तरफ़ से बिल्कुल रोकना मुनासिब नहीं है, यानी जिस क़दर कि वास्ते कार्र-वाई रोज़गार और ग्रहस्त के कारोबार के, सुरत और मन की धार का बाहर की तरफ़ मुतवज्जह होना ज़रूर है, वह बदस्तूर जारी रखना चाहिये। ताकि जिस क़दर मसाला बाहर मुखी अंतर में अहार करने से जमा हुआ है, वह धारों के वसीले से निकल जावे, और जो ख़ुलासः का ख़ुलासः क़ाबिल चढ़ने कुछ दूर तक ऊंचे देश की तरफ़ के है ठहरा रहे। इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी जीवों को लाज़िम है, कि फ़ज़ूल बहाव अपने मन और सुरत का बाहर की तरफ़ रोकते रहें। और जिस क़दर कि अभ्यास ज़्यादः, और ब्योहार और रोज़गार का काम कम होता जावे, उसी क़दर अहार भी कम करते जावें, और उसी मुवाफ़िक़ बाहर मुख संसारी कार्रवाई भी हलकी होती जावेगी, यानी सुरत और मन की धार का बहाव बाहर की तरफ़ कम होता जावेगा ॥

अभ्यास के वक़्त ख़ास कर इस बात का ख़्याल रखना चाहिये, कि जो गुनावन संसारी या परमार्थी बाहर मुख कार्रवाई की उठेगी और इस क़िसम के ख़्याल और तरंग पैदा होंगी, तो वह मन और सुरत की चढ़ाई में ख़लल डालेंगी, यानी धार का रूप बंधने न देंगी, और न उसको ऊपर की तरफ़ सिमटने और चढ़ने देंगी, फिर अभ्यास का रस कैसे आवेगा, और आइंदः को शौक़ कैसे बढ़ैगा। इस वास्ते मन और सुरत की धार को बाहर की तरफ़ झुकाव और बहाव से रोकना निहायत ज़रूर और लाज़िम है ॥

१४—(३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये, कि मन में फ़ज़ूल ख़्वाहशें संसारी तरक़्क़ी और इन्द्रियों के भोग बिलास की न उठें, और जो ऐसी तरंगें पैदा होवें, तो उनको रोकता रहे ॥

मालूम होवे कि अलावह मन के ख़मीर के संसारी होने के, वह जन्मान जनम और हाल के जनम में साल-हासाल से संसारियों का संग करके संसारी भोग बिलास और मान बड़ाई और तरक़्क़ी धन और माल और हकू-मत और कुटम्ब परवार की चाह उठाता चला आया है और उसी निमित्त करम करता रहा है। यहां तक कि कुल्ल

वक़्त अपना इसी क़िस्म की कार्रवाई और ऐसे ही लोगों के संग सोहबत में ख़र्च करता रहा है, फिर यकायक इसका रुख़ और स्वभाव बदलना, बग़ैर दया संत सतगुरु और उनके और प्रेमी जन के संग के मुमकिन नहीं है। कोई दिन बाहर का सतसंग और अंतर में अभ्यास करके इस क़दर ताक़त आ जावेगी, कि अपने मन की निगरानी और सम्हाल कर सकैगा, यानी मन में फ़ज़ूल और नामुनासिब तरंगों की हिलोर उठतेही उसको परख कर रोक संकैगा ॥

यह मन बड़ा ज़बरदस्त है और किसी के क़ाबू में नहीं आ सक्ता है, सिर्फ़ संत सतगुरु ने इसको जीता है, उनकी दया से उनके प्रेमी सेवक भी इसको किसी क़दर क़ाबू में ला सक्ते हैं, यानी इस्से परमार्थी कार्रवाई दुरुस्ती से ले सक्ते हैं। और बाक़ी रचना के सिर पर मन और माया सवार हैं, और जैसा चाहते हैं उस मुवाफ़िक़ उस रचना में कार्रवाई कराते हैं ॥

हर एक सच्चे परमार्थी को अपने मन की चौकीदारी या निगरानी करना ज़रूर है, और जब तक कि दसवें द्वार तक न पहुंचे, तब तक उसकी तरफ़ से बिल्कुल निःचिन्त और निर्भय होना नहीं चाहिये और कुल्ल कार्रवाई उसके रोकने और क़ाबू में लाने

की, संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का आसरा और बल लेकर, मज़बूती के साथ करनी चाहिये, यानी ढीले होना या घबराना नहीं चाहिये ॥

१५–(४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बे परवाह हैं, वे किसी से कुछ नहीं चाहते पर जो जीव उनका दर्शन (उनके निज धाम में पहुंच कर) करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है कि उनके चरनों में सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा, और चाल आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी ॥

जो कोई सच्चा परमार्थी है उसके हिरदे में ज़रूर सच्ची दीनता और सच्चा प्रेम, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में पैदा होगा, पर दीनता और प्रेम में दरजे हैं, सो सतसंग और अभ्यास करके दिन २ तै होते जावेंगे ॥

सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी का स्वरूप यह है–(१) जैसे बीमार को साथ हकीम या डाक्टर के, (२) और निरधन को साथ धनवान के, (३) और नौकरी या ख़िदमत के चाहनेवाले को साथ राजा और हाकिम

के; और सच्ची और ज़बर लगन का स्वरूप यह है– (१) जैसे माता को पुत्र प्यारा है, (२) और कामी को कामिन प्यारी है, (३) और मछली को पानी, (४) और पपिहा को स्वांति की बूंदें ॥

१६–अब थोड़ा सा बयान उन दृष्टान्तों का जो सच्ची दीनता की बाबत ऊपर दिये हैं लिखा जाता है ॥

(१) पहिला बीमार आदमी डाक्टर और हकीम का मुहताज है, और उसको सच्ची ग़र्ज़मंदी हकीम और डाक्टर के साथ होती है। इसी तरह कुल्ल जीवों का मन बीमार है, यानी संसार के भोगों में फंसा और ग्रसा हुआ है, जो उसके बिकार दूर न किये जावेंगे, तो उसकी देह बिगड़ती चली जावेगी, यानी नीचे की जोनों में उतरता चला जावेगा। अब परमार्थ में संत सतगुरु हकीम और डाक्टर हैं और वे मन बीमार का इलाज खूब कर सक्के हैं कि जिस से यह मन भोगों और संसार की तरफ़ से हट कर अपने निज घर में जो त्रिकुटी का अस्थान है पहुंच कर तीन लोक का राज पावे और सुखी हो जावै। दवा उसकी बीमारी के दूर करने की बाहर से सतसंग सतगुरु और प्रेमीजन का, और अंतर में अभ्यास सुरत शब्द मारग का, और परहेज़ यह है कि इन्द्री भोगों और मान

बड़ाई की तरंगों से जहां तक मुनासिब और मुमकिन होवे बचाव रखना ॥

(२) दूसरे सब जीव निरधन हो रहे हैं, यानी भक्ती और प्रेम का धन गंवा बैठे हैं और इस क़दर माया के झूंठे धन के मुहताज हो गये हैं, कि अपनी चेतन्यता भी दिन २ खोते जाते हैं, और अनेक तरह के करम करते हैं और कष्ट और कलेश सहते हैं और कोई सूरत निकासी की नज़र नहीं आती ॥

फिर संत सतगुरु पूरे धनवान हैं, यानी भक्ती और प्रेम का भंडार उनके इख़्तियार में है, और माया भी उनकी ताबेदार है। जो कोई उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत के साथ सतसंग करे और उनका बचन माने, और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास करे, तो वे प्रसन्न होकर उनको प्रेम का धन दान देवेंगे, और माया के सामान की बेक़दरी उसके चित्त में जताकर उसकी तरफ़ से बे परवाह कर देंगे ॥

प्रेम की दौलत अपार है, जिस क़दर चाहे ख़र्च करे उसका भंडार कभी घटता नहीं है, और यह धन बिरले बड़ भागियों को दया से मिलता है ॥

(३) जो कोई नौकरी या ख़िदमत का चाहनेवाला है, वह राज दरबार में या हाकिमों के संग निहायत

दीनता के साथ बर्ताव करता है, और बहुत शौक़ के साथ ख़िदमत करने को तइयार रहता है ॥

अब समझो और बूझो कि संत सतगुरु महाराजाओं के महाराजा और शाहनशाहों के शाहनशाह हैं, उनकी ख़िदमत और सेवा और सतसंग किसी बड़ भागी को मिलता है, और फिर उसी को सब से बड़ा और भारी दरजा, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचने और बिश्राम करने का बख़्शिश होता है। यह दरजा ब्रह्मा विष्णु महादेव और ईश्वर परमेश्वर तक को मुयस्सर नहीं हो सक्ता ॥

गुरु पूरे का सेवक बरतर। क्या जो हुकम करे राजों पर ॥
कौन करे आरत सतगुरु की ॥

ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं। मिली नहीं यह पदवी ॥ १ ॥
कोट तेंतीसो राग बैरागी। इंद्र मुनिंदर भटकी ॥ २ ॥
सतगुरु बिन खोज नहिं पाया। करम भरम बिच अटकी ॥ ३ ॥
बड़े भाग जानो अब उनके। जिनको सरन परापत गुरु की ॥ ४ ॥
गुरु समान समरथ नहिं कोई। जिन धुरधर की आन खबरदी ॥ ५ ॥

१७—अब उन दृष्टान्तों का बयान किया जाता है जो प्रेम प्रीत के बारे में दिये हैं ॥

(१) अव्वल माता और पुत्र की प्रीत—यह प्रीत बहुत निर्मल और बेग़र्ज़ है, और इस क़दर ज़बर है

कि माता पुत्र की बीमारी और तकलीफ़ में अपना खाना पीना सोना और ज़रूरी हाजात वग़ैरः को भी किसी क़दर बिसर जाती है, और बच्चे के आराम और ख़िदमत को सब कामों पर मुक़द्दम रखती है। ऐसेही परमार्थी और प्रेमी जीव संत सतगुरु की सेवा में सरगरम रहते हैं, और अपने तन के आराम और इन्द्रियों के भोग वग़ैरः को बिसराये रहते हैं; यानी जब जो मुयस्सर आया वही बहुत ख़ुशी के साथ ग्रहन करते हैं, और जब वक़्त मिला और थोड़ी फ़ुर्सत पाई उस वक़्त अपनी हाजात रफ़ा करते हैं और आराम करते हैं। ख़ुलासह यह कि संत सतगुरु की प्रीत ऐसी ज़बर उनके हिरदे में बसी हुई है कि उनकी सेवा और सतसंग के मुक़ाबल में, किसी चीज़ और किसी काम की बल्कि अपनी भूख प्यास और आराम तक की सुध नहीं आती, और हरदम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की याद और ख़्याल हिरदे में बसा रहता है ॥

(२) दूसरे कामी की कामिन के साथ—यह प्रीत भी बहुत ज़बर है, और इसके मुक़ाबलह में कोई और मुहब्बत नहीं ठहरती, यानी दुनिया भर की प्रीतें इस प्रीत के तले रहती हैं, और तन मन धन भी कामी

पुर्ष कामिन पर नौछावर करता है, और चाहे जैसी दुनिया में बदनामी होवे उसको सहज में सहता है, और निन्दकों और ताने मारने वालों के बचन का बिल्कुल ख़्याल नहीं करता है, और न अपने नफ़े और नुक़सान पर नज़र करता है ॥

परमार्थ में भी ऐसी ही प्रीत अव्वल नम्बर समझी जाती है, कि अपने प्रीतम के मुक़ाबलह में कोई प्रीत किसी क़िसम की, और कोई चीज़ की क़दर या बड़ाई नहीं रहती है। संत सतगुरु या कुल्ल मालिक के प्रीत का ऐसा पक्का रंग प्रेमीजन के हिरदे में चढ़ जाता है, कि फिर कोई दूसरा रंग उसके सामने नहीं ठहरता। प्रेमी को प्रीतम के दर्शन और बचन और सेवा ऐसी प्यारी लगती है, कि दूसरे काम की उसको सुध भी नहीं रहती ॥

ऊपर के दोनों बयान से यह मतलब नहीं है, कि प्रेमी दुनिया के कारोबार सब छोड़ देवे, और सर्ब अंग करके रात दिन परमार्थी कार्रवाई में ख़र्च करे। उस बयान का मतलब यह है, कि प्रेमी के मुख्यता प्रीतम की याद और सतसंग और सेवा की हिरदे में रहेगी, और दूसरे दरजह पर दुनिया के कारोबार भी करता रहेगा, मगर उनमें पकड़ और बंधन बहुत

कम होगा, ज़रूरत के वक़्त प्रेमी सब से न्यारा होने को तइयार रहेगा ॥

(३) तीसरे मछली की प्रीत जल के साथ–इस प्रीत की महिमां साफ़ ज़ाहर है कि जल मछली का आधार है, बग़ैर उसके उसकी ज़िंदगी क़ायम नहीं रह सक्ती ॥

इसी तरह प्रेमीजन को संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की प्रीत का आधार रहता है यानी जब तक कि गुरु स्वरूप का ध्यान करके और सुरत को शब्द में लगाकर मामूली रस न लिया जावे, तब तक प्रेमी को निहायत दरजे की बेचैनी और बेकली रहती है, और कोई काम या चीज़ या कोई दूसरा ख़्याल उसको नहीं सुहाता, और न उसके मन को चैन और आराम मिलता है ॥

(४) चौथे पपीहा की प्रीत स्वांतिबूंद के साथ–यह जानवर साल भर में सिर्फ़ एक दो बार स्वांति बूंद को पीकर त्रिप्त रहता है, और जब तक वह न मिले उसकी रटना लगाये रहता है। मगर चाहे जैसी गरमी पड़े वह दूसरे जल को नहीं छूता या पीता है। इसी तरह प्रेमी जन अपने सच्चे और कुल्ल मालिक के दर्शनों की आसा में उनके नाम को रटते रहते हैं, और जब भाग से दर्शन मिल जाय तब मगन हो जाते

हैं। लेकिन और कोई पदार्थ उनकी लाग और लगन को हलका या ढीला नहीं कर सक्ता, यानी तमाम रचना के भोग और बिलास पेश किये जावें, या सिवाय धुरधाम के और कोई पद या अस्थान रास्ते का उनको फ़तह हो जावे, तो भी पूरी शान्ती किसी तरह हासिल नहीं हो सक्ती, और न प्यास और तड़प दर्शन जमाल कुल्ल की दूर हो सक्ती है॥

उपदेश

१८—कुल्ल परमार्थी जीवों को मालूम होवे कि कोई काम संसारी या परमार्थी बग़ैर इन सब अंगों में या बाज़ों में (जहां जैसी ज़रूरत है) बर्ताव करने के दुरुस्ती के साथ नहीं बन सक्ता, और सच्ची दीनता और सच्ची लगन यानी शौक़ या मुहब्बत तो हर काम में दरकार है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि परमार्थ के मुआमलह में बेपरवाही और सुस्ती छोड़कर, इन सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्ताव करे, तब कुछ फ़ायदह नज़र आवेगा, नहीं तो बग़ैर सुरत और मन के संग के जो करतूत बन आवेगी, वह शुभ करनी का फल देगी। पर सच्चे परमार्थ का फ़ायदह जो कि सुरत का निज धाम में पहुंच कर बिश्राम पाना, और हमेशः को परम आनंद का प्राप्त होना, और जनम

मरन के चक्कर से छूटना है, कभी नहीं हासिल होगा ।

जिस क़दर बाहर मुख करनी है वह शुभकरम में दाख़िल हो सक्ती है ॥

सिर्फ़ अंतर मुख अभ्यास सुरत और मन की चढ़ाई का जीव के उद्धार में मदद दे सक्ता है, और वह सुरत शब्द मारग का अभ्यास है ॥

१६—अब जो कोई इस बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करेगा, वह अपनी हालत चढ़ाई की वक़्त् फ़वक़्त् यानी जब तब जांच सक्ता है, और इसी ज़िंदगी में अपनी मुक्ति होती हुई परख सक्ता है, और अख़ीर वक़्त की तकलीफ़ को बचा सक्ता है ॥

२०—जो कोई रसमी परमार्थ में अटका रहेगा और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का खोज और पता लगाकर, उनके धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का जतन सुरत शब्द योग के मुवाफ़िक़ नहीं करेगा, वह हमेशः माया देश में ऊंच नीच देश और ऊंची नीची जोनों में भरमता रहेगा ॥

बचन–१३

परमार्थी जीवों को भक्ती अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये, और उसके साथ थोड़ा बैराग भी रखना चाहिये, और दुनिया के कामों में साधारन तौर पर बर्तना चाहिये– बहुत मोह और आशक्ती दुखदाई है ॥

१—परमार्थी जीवों को भक्ती अंग हमेशः क़ायम रखना चाहिये, और उसके साथ थोड़ी बहुत बैराग की भी धारना चाहिये, और अंतर अभ्यास थोड़ा बहुत बिला नाग़ह जारी रखना चाहिये ॥

२—भक्ती में तीन बातें दरकार हैं–पहिले अपने भगवंत यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को हर वक़्त हाज़िर और नाज़िर समझना, और दूसरे अपने मालिक को सर्ब समर्थ मानना, और तीसरे इस बात का यक़ीन करना कि जो कुछ होता है मालिक की मौज से होता है, बिना उसकी मौज के कुछ नहीं हो सक़ा, और जिस क़दर बने मौज के साथ हो मुवाफ़क़त करना ॥

३—इसी तरह बैराग की सम्हाल के वास्ते भी तीन बातों का ख़्याल रखना चाहिये—पहिले यह कि सिवाय मामूली और मुक़र्ररह बर्ताव के मन और इन्द्रियों को रस देने के वास्ते भोगों की चाह और तरंग न उठावे। दूसरे जो भोग अनिच्छित या परिच्छित प्राप्त होवें, तो उनमें अहतियात के साथ बर्ताव करे, पर शर्त यह है कि यह भोग नाजायज़ और ममनूअ न होवें[१]। तीसरे जो भोग कि अनिच्छित या परिच्छित या मामूली तौर पर प्राप्त होवें, उनकी त्रिश्ना यानी ज़्यादह तलबी न करे, क्योंकि इसमें बंधन और फिर बंधन के सबब से दुख प्राप्त होगा, और वह भक्ती में ख़लल डालेगा॥

४—भक्ती में यह क़ायदह मुक़र्ररर है कि भक्त जो काम करे, वह अपने भगवंत की मौज के आसरे करे, और जैसा कुछ कि उसका नतीजा यानी फल होवे, उसको मंज़ूर और क़बूल करे, और शिकायत न करे, क्योंकि जो शिकायत करी और नाराज़ हो गया तो भक्ती के बर्ताव में ख़लल पड़ेगा, यानी प्रीत और प्रतीत जब तब रूखी और फीकी हो जावेगी। ख़ुलासह यह कि जो मौज के साथ राज़ी रहा तो उत्तम दरजा है, और जो साधारन तौर पर रहा यानी न राज़ी और न नाराज़

१—जिस के वास्ते हुकम नहीं है।

वह मध्यम दरजा, और जो नाराज़ हुआ और कुछ देर तक रूखा फीका रहा, और फिर आपही सोच समझ कर सम्हल गया, तो तीसरे दरजे की भक्ती रही ॥

५—अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो भक्ती अंग क़ायम रखने के वास्ते ज़रूर हैं लिखा जाता है ॥

६—(१) पहिले अपने स्वामी को हाज़िर और नाज़िर समझना—कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल घट २ में शब्द स्वरूप और प्रकाश स्वरूप से हर वक़्त मौजूद हैं। और जो कुछ कि करनी जीव से बनती है, वह देख रहे हैं। इसी तरह संत सतगुरु भी अपने सूक्षम स्वरूप से, अपने निज सेवकों के घट में मौजूद रहते हैं, और उनकी कार्रवाई पर नज़र रखते हैं। जो बात नापसंद होती है (तो जो मौज हो) सेवक को जता देते हैं, या अंतर में प्रेरना करके या बाहर से कोई मौज करके उसकी कार्रवाई बंद कर देते हैं, नहीं तो अपनी गम्भीरता के स्वभाव से चुप्प हो रहते हैं।

७—(२) दूसरे अपने मालिक को सर्ब समर्थ मानना-मालूम होवे कि चेतन यानी रूह की धार सब जगह देह में फैली हुई है, और हर जगह कार्रवाई उसी की शक्ती से जारी है। जब कोई तरंग उठती है, तो पहिले हिलोर मन के अस्थान पर होती है, और फिर